समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

फरवरी २००४ ♦ वर्ष ५४ ♦ अंक २ ♦ एक प्रति १० रुपए ♦ वार्षिक १०० रुपए

राजस्थान की मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे एवं जोधपुर के पूर्व नरेश महाराजा गज सिंह को अलग-अलग दिए गए स्मृति चिन्ह दोनों के बीच प्रदर्शित।

केन्द्रीय राज्यमंत्री एवं कार्यकारिणी के सदस्य श्री दिलीप गांधी दीप प्रज्वलित कर अधिवेशन का उद्घाटन करते हुए।

श्रीमती वसुन्धरा राजे अधिवेशन को सम्बोधित करती हुई।

सम्मेलन के १९वें राष्ट्रीय महाधिवेशन का विवरण

मुम्बई ९, १०, ११ जनवरी २००४

सम्मेलन के नये पदाधिकारीगणों की सूची

सम्मेलन के अनुरोध पर
कविवर
कन्हैयालालजी सेठिया
भारत सरकार द्वारा
पद्मश्री
से विभूषित

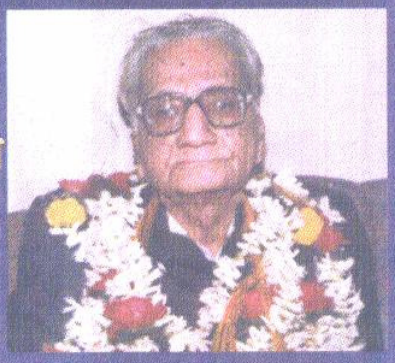

कामयाब २००४

व्यक्तित्व विकास शिविर

१० से १८ वर्ष की आयु के छात्र एवं छात्राओं के लिए
दि. २ मई से ३० मई २००४ तक

अश्वारोहण, गिर्यारोहण, स्वीमिंग, जूडो-कराटे, बास्केट बॉल, योग, अंग्रेजी संभाषण, भक्ति संगीत और बहुत कुछ रहेगा इस संस्मरणीय शिविर में आपके बच्चों के शारीरिक एवं बौद्धिक विकास के लिए। आज ही प्रवेश निश्चित करे, प्रथम आने वाले को प्रथम प्रवेश दिया जाएगा। आपके बच्चों की धूपकालीन छुट्टियां सुयोग्य प्रकार से व्यतीत होने के लिए...

शिविर की कुल फी ४२००/- रु.

प्रवेश के लिए अंतिम दिनांक १५ अप्रैल २००४

सम्पर्क

कमांडर पी.सी. सोकी,
प्रधानाचार्य, सहकार विद्या मंदिर,
विद्या नगरी, चिखली रोड, बुलडाणा- ४४३ ००१
दूरध्वनि : २४४७०५, २४५७०५

राधेश्याम चांडक,
अध्यक्ष, बुलडाणा अर्बन
चांडक निवास, बुलडाणा ४४३००१
दूरध्वनि : २४२७०५, २४३७०५, ९८२२२२९३८१

विशेष सूचना : १) प्रवेश प्रपत्र एवं माहिती पुस्तिका सहकार विद्या मंदिर बुलडाणा में उपलब्ध है। (मूल्य ४० रुपये) माहिती पुस्तिका पोस्ट से भेजने हेतू अधिक चार्जेज रु. १५/- मनिऑर्डर या डी.डी. द्वारा भेजे।

२. सहकार विद्या मंदिर यह अंग्रेजी माध्यम की निवासी विद्यालय है। वर्ग १ से १२ के लिए दि. १५ अप्रैल २००४ से प्रवेश देना शुरू है। माहिती पुस्तिका के लिए रुपये ५०/- और पोस्टल चार्जेज २०/- रु. मनिआर्डर या डी.डी. द्वारा भेजे।

"We don't build your future, We build you for the future"

Note : Persons or agencies interested in the franchisee of admissions for class I to XII are to contact at the above address.

इस अंक में

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के १९वें राष्ट्रीय अधिवेशन एवं दक्षिणांचल अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच के प्रथम अधिवेशन, ९, १०, ११ जनवरी, २००४ मुम्बई की विस्तृत रिपोर्ट -

समाज विकास

वर्ष ५४ ● अंक २

एक प्रति- १० रु.

वार्षिक- १०० रु.

समाज विकास

१. अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का विचार मंच।
२. सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक चेतना का संवाहक।
३. समाज में फैली कुरीतियों, कुसंस्कारों को मिटाने का माध्यम।
४. समाज में संगठन के लिए सशक्त माध्यम।
५. राजस्थानी संस्कृति, कला, साहित्य व भाषा के प्रति समर्पित।
६. समाज में होने वाली सामाजिक घटनाओं, वर्जनाओं का वैचारिक संदेशवाहक।
७. भारत के कोने-कोने में फैले हुए ९ करोड़ मारवाड़ियों को शब्द प्रदाता।
८. आपकी आवाज व विचारों को देश-विदेश के कोने-कोने में बुलन्दी देने हेतु

ग्राहक बनिये / बनाइये
लिखिये / लिखाइये

अनुक्रमणिका ३

जनवाणी ४-५

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के नये पदाधिकारीगणों की सूची ६

अध्यक्ष की कलम से ७

कविवर कन्हैयालाल सेठिया का अभिनन्दन ८-९

अधिवेशन पर प्राप्त शुभकामनाएं १०

अधिवेशन रिपोर्ट ११-३४

स्वत्वाधिकारी : अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, १५२-बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता- ७, फोन : २२६८-०३१९ के लिए श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा इलस्ट्रेटेड इंडिया प्रेस, ७४, लेनिन सरणी, कोलकाता- ७०००१३ में मुद्रित।

संपादक-नंदकिशोर जालान

ज न वा णी

इस स्तम्भ के अंतर्गत सांस्कृतिक, आर्थिक एवं सामाजिक विषयों पर पाठकों के मतों का स्वागत है। साथ ही समाज के आंतरिक एवं गहन विषयों तथा समाज विकास में प्रकाशित सामग्री पर आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव भी आमंत्रित है।

–सम्पादक

अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन की हम बहनें राष्ट्रीय अध्यक्ष आदरणीय श्री मोहनलाल तुलस्यान को बहुत-बहुत धन्यवाद देती हैं कि आपने २० दिसम्बर २००३ को चास-बोकारो (झारखण्ड) में अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन के एकादश राष्ट्रीय अधिवेशन के उद्घाटन समारोह में विशिष्ट अतिथि का पद सुशोभित कर हमें अनुगृहीत किया। आपके आगमन से हम बहनों का उत्साह वर्धन हुआ तथा हमें आपके अनुभव से मार्गदर्शन भी प्राप्त हुआ। हम बहनें आपकी आभारी हैं। आशा है भविष्य में भी आपका आशीर्वाद अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन को प्राप्त होता रहेगा।

– डॉ. मंजु मेहरिया, राष्ट्रीय अध्यक्षा
श्रीमती गंगा भालोटिया, राष्ट्रीय महामंत्री

बंधुवर श्री सीतारामजी शर्मा के महामंत्रीत्वकाल में समायोजित अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, कोलकाता के मुंबई अधिवेशन में सम्मिलित होने का मुझे जो सौभाग्य तथा शुभ अवसर मिला, उसे मैं ईश्वरीय अनुकम्पा तथा आपकी आत्मीयता, सदाशयता एवं गुणग्राहकता के रूप में ही विनम्रतापूर्वक सहर्ष स्वीकार कर आपके प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूं। मारवाड़ी समाज के अभ्युत्थान, विकास तथा सुधार की दिशा में आप जिस समरसता के सिद्धांत पर अनेक वर्षों से जो सतत् प्रयास कर रहे हैं, वे निस्संदेह अभिनंदनीय एवं अनुकरणीय हैं। मुझे विश्वास है कि जिस पुनीत उद्देश्यों से प्रेरित होकर आप उन्हें निरंतर गतिशील बना रहे हैं, वे आपके रचनात्मक कार्यक्रमों और साधनात्मक उपक्रमों द्वारा अपने परम् लक्ष्य की चरम कोटि उपलब्ध कर सकेंगे।

– डॉ. वेंकट शर्मा
जोधपुर, राजस्थान

मुंबई में सम्पन्न १९वां अधिवेशन सफलता के नये आयामों को स्पर्श करता हुआ ऐतिहासिक सफलता के साथ सम्पन्न हुआ, तदर्थ बधाई। श्री सीताराम शर्मा ने महामंत्री के रूप में सम्मेलन को प्रगति की ओर अग्रसर किया है तथा उक्त दो सत्र सम्मेलन के इतिहास में अविस्मरणीय रहेंगे। आपकी सेवाओं की जितनी भी प्रशंसा की जाये कम है। पुनश्च: आपको बधाई।

– श्री रामकिशन गुप्ता
अध्यक्ष, आन्ध्र प्रा.मा. सम्मेलन, हैदराबाद

समाज विकास आपके सम्पादकत्व में बहुत ही सुन्दर और सुरूचिपूर्ण स्वरूप में प्रकाशित हो रहा है। जनवरी अंक बहुत ही सराहनीय, पठनीय और मननीय बन पड़ा है। श्री मोहनलाल तुलस्यान के लगातार दूसरी बार राष्ट्रीय अध्यक्ष निर्वाचित होने से हार्दिक प्रसन्नता हुई। सम्मेलन ने श्री दीपचंद नाहटा का अभिनंदन कर बहुत ही प्रशंसनीय कार्य किया है। प्रकाशित सामग्री बहुत ही प्रेरक, श्लाघनीय और संग्रहणीय है। कविता 'राजस्थान गौरव' हृदय स्पर्शी और ऊद्बोधक है। सम्पूर्ण अंक सामाजिक चेतना का अलख जगाते हुए नये समाज की रचना का संदेश देता है।

– श्री युगल किशोर चौधरी
चनपटिया, बिहार

समाज विकास अक्टूबर अंक में प्रकाशित मारवाड़ी राजनीति में संगठित रूप से आगे आए शीर्षक श्री सूर्यकरण सारस्वा का आलेख पढ़ा। इसमें उठाए गये मूल-बिन्दुओं पर ध्यान देने से ऐसा लगा कि पूरे विश्व में अपनी अलग पहचान प्रदर्शित करने वाला मारवाड़ी समाज आर्थिक सत्य के साथ-साथ राजनैतिक रूप से भी अपनी अस्मिता कायम करे। अन्यथा बिना कवच के वीर की भांति अन्ततोगत्वा इसे पराजय का मुख देखना पड़ सकता है, बात बिल्कुल सही और सटीक कही गयी है। लेखक और सम्पादक को मेरी ओर से धन्यवाद।

– श्री शंकरलाल चोखानी
लोक सेवा दल, राष्ट्रीय अध्यक्ष दिल्ली

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि श्री भानीराम जी सुरेका अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के महामंत्री मनोनीत किए गए हैं। मुझे आशा है कि उनके ठोस पथ प्रदर्शन में सम्मेलन और समाज विकास विकास के नये सोपान तक पहुंच पाने में सफलता अर्जित करेगा।

– घनश्याम शर्मा
महामंत्री, हावड़ा शाखा मारवाड़ी सम्मेलन

२४ दिसम्बर २००३ को संसद ने बोरो, मैथिली, संथाली, डोगरी भाषाओं को संविधान की आठवीं अनुसूची में लेने का प्रस्ताव पारित कर संवैधानिक मान्यता के लिए पिछले ५६ वर्षों से तरस रही राजस्थानी भाषा को इस बार भी टाल दिया। इससे पूर्व १९९२ में भी राजस्थानी भाषा की उपेक्षा की गई थी। राजस्थानी भाषा का हजारों वर्ष पुराना समृद्ध साहित्य भंडार, शब्दकोष, व्याकरण, लोककथाएं, लोकगाथाएं विश्व विख्यात हैं ऐसी भाषा जिसके बोलने वाले १२ करोड़ नागरिक हैं। भारत का सबसे बड़ा प्रदेश है। ऐसे देश की उन्नति एवं विकास में अहम् भूमिका निभाने वाले मारवाड़ी समाज की मातृभाषा राजस्थानी राजनैतिक कारणों से उपेक्षित हो रही है। आज केन्द्र में राजस्थान प्रदेश के नेता का भारतीय रणनीति पर गहरा प्रभाव है। श्री भैरोंसिंहजी शेखावत, श्री जसवंतसिंहजी जसोर, डॉ. एल.एम. सिंघवी जैसे प्रभावी नेता सत्ता पर छाये हुए हैं फिर भी १२ करोड़ नागरिकों की मातृभाषा को संवैधानिक मान्यता का दर्जा नहीं। यह हम सबके लिए शर्म एवं पीड़ा की बात है। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से बार-बार राजस्थानी भाषा की मान्यता की मांग उठाई गई है। अनुरोध है कि अपने सभी प्रदेश प्रभारियों को राजस्थानी भाषा को इस बार भी संवैधानिक मान्यता से वंचित रखने के कृत्य को निंदनीय बताते हुए श्री लालकृष्णजी आडवाणी को विरोध-पत्र लिखते हित निर्देशित कराने का श्रेय एवं प्रेय कार्य करावें।

आदरणीय जालानजी के दिशा-निर्देशन में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र समाज विकास पत्रिका अपने प्रगतिमय की ओर अग्रसर हो रही है। साहित्यिक सामग्री एवं प्रवासी बंधुसेवी गतिविधियों की

जनवाणी

सराहनीय जानकारी मिल रही है।

- लक्ष्मणदान कविया
मुण्डवा, नागौर, राजस्थान

६९वां स्थापना दिवस के मौके पर समाजसेवी श्री दीपचंद नाहटा को सम्मानित करना अच्छा लगा। नाहटाजी के पूरे परिवार को देखने का भी मौका मिला। समाज के कलाकारों का यह कार्य सराहनीय है। समाज के उत्थान में अभिनंदन से समाज को प्रेरणा मिलती है। कलकत्ते की प्राय: सभी संस्थाओं ने भी नाहटाजी को माला पहनाकर और शॉल ओढ़ाकर अपनी हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त की। सर्वश्री मोहनलाल तुलस्यान, प्रह्लादराय अग्रवाल, प्रो. कल्याणमल लोढ़ा इत्यादि सभी व्यक्तियों का भाषण सराहनीय रहा।

- परशुराम तोदी 'पारस'
सलकिया, हावड़ा

पेड़ की जड़ मजबूत रहेगी तो उसकी शाखाएं भी सही सलामत और सदैव हरे-भरे रहेंगे। आपके ऊपर समाज की बड़ी भारी जिम्मेवारी है जिसे आपलोग निभा रहे हैं। आशा और विश्वास है कि आप सबों का सहयोग समाज पर सदैव बना रहेगा। समाज को सही मार्ग बताने में आप हर समय आगे रहेंगे। समाज विकास पत्रिका की बहुत बड़ी सेवा व सहयोग है।

- अशोक कुमार अग्रवाल
सम्बलपुर, उड़ीसा

मैं इस वक्त अधिवेशन में आने में असमर्थ हूं। मेरी सद्भावना आपलोगों के साथ है। आपकी मासिक पत्रिका भी मिलती है, आप लोग सारे कार्यकर्ताओं को मेरी शुभकामना। आप लोग समाज सुधार का पूरा प्रयास करते हैं मगर अपने समाज में सुधार का असर कम ही नजर आता है। आप लोग पूरी चेष्टा में लगे हुए हैं बहुत खुशी की बात है।

- नौरंगलाल शर्मा
सिलीगुड़ी, पश्चिम बंगाल

श्री अरुण गुप्ता के निम्न मनोनयन के लिए सम्मेलन की बधाई-

"SRI ARUN GUPTA (Life Member) has been nominated as Member of State Consultative Committee of THE FOOD CORPORATION OF INDIA, West Bengal as per Ministry of Consumer Affairs, Food & Public Distribution, Govt. of India Order dated 29th December 2003 for a 2 (two) Years term."

"As Advisory Penel Member of CENTRAL BOARD OF FILM CERTIFICATION, Kolkata as Ministry of Information & Broadcasting notification dated 4th February 2004 for a period of 2 (Two) Years".

Since 1998 he has been nominated for Third consecutive term.

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री निर्वाचित होने पर श्री भानीराम सुरेका को मेरी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपके सफल नेतृत्व में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन अपने कार्यक्रमों को पूर्ण रूप से कार्यान्वित करेगा।

आशा करता हूं कि झारखण्ड प्रान्ती मारवाड़ी सम्मेलन को आपकापूर्ण सहयोग एवं मार्गदर्शन प्राप्त होगा।

- विनय सरावगी
महामंत्री, झारखण्ड प्रान्तीय मा.सम्मेलन

आज भी मुझे १९६२ से १९६६ की महत्वपूर्ण अवधि याद है, जब मैं विद्याध्यन में लगा हुआ था, जबकि परिवार के एक ही अभिभावक पिताश्री श्याम भक्त स्व. मूलचन्द शर्मा (सलनानियां) पटना सिटी निवासी थे। उस समय वे अपने परिवार का उपार्जन करने वाले; भरण-पोषण, शिक्षा-दीक्षा करते थे।

सचमुच में उस समय परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। उसी समय मुझे पिताश्री या बिहार मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा समिति के बारे में जानकारी मिली। मेरा मन प्रसन्न हो उठा। मुझे तो लगा कि २५ लाख की लौटरी मुझे ही निकल गई। उस समय शिक्षा समिति के महामंत्री स्व. श्री हरिराम जी गुटगुटिया एवं अध्यक्ष स्व. श्री अर्जुन अग्रवाल थे। जिन्होंने मुझे २५/- (पच्चीस) रुपये मासिक छात्रवृत्ति देनी शुरू की। अब तो मेरा मनोबल काफी ऊंचा हो गया। उस समय २५/- रु. की राशि का काफी महत्व था। वास्तव में शिक्षा समिति ने तो मेरा जीवन ही बदल दिया। मैंने एम. कॉम तक पटना विश्वविद्यालय से किया।

शिक्षा समिति की सहायत से ही मैंने अनेक बिहार सरकार, केन्द्रीय सरकार एवं भारतीय स्टेट बैंक के उच्च पद को सुशोभित कर आज मैं भी उसी बिहार मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा समिति के सचिव पद पर पहुंच कर मारवाड़ी समाज की सेवा कर गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं। साथ ही अनेक सामाजिक संस्थाओं से जुड़ा हुआ हूं। आज भी शिक्षा समिति के अध्यक्ष श्री विजय बुधिया एवं महासचिव श्री हरिकृष्ण अग्रवाल के साथ इस विद्या दान में लगा हूं।

सचमुच में शिक्षा-समिति एक सामाजिक संस्था है, जो मेधावी जरूरतमंद छात्र-छात्राओं को उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु आर्थिक सहायता छात्रवृत्ति के रूप में करती आ रही है। इससे समाज में पढ़ने वालों के बीच एक नया जोश व प्रोत्साहन मिलता है एवं जीवन में आगे बढ़ने की अद्भुत शक्ति मिलती है।

यह संस्था १९८२ से ही निबंधित है फिर धारा ८० जी के अन्तर्गत होने के कारण दी गई राशि पर आयकर से भी छूट मिलती है।

आईए, हम सभी बिहार एवं झारखंड वासी इस पुण्य एवं चमत्कारिक कार्य में तन-मन-धन से एकजुट होकर लग जायें और प्रतिज्ञा करके समाज का एक भी पुत्र एवं पुत्री अनपढ़ न रहें।

जय शिक्षा, जय शिक्षा समिति।

- प्रह्लाद शर्मा
भूतपूर्व शाखा प्रबन्धक, भारतीय स्टेट बैंक
सह सचिव, बिहार मा.स. शिक्षा समिति

जनवरी अंक लम्बे समय अंतराल के बाद पुन: प्राप्त हुआ। यह पढ़कर काफी प्रसन्नता हुई कि सुप्रतिष्ठित समाजसेवी श्री दीपचंद नाहटा को ६९वें स्थापना दिवस पर सम्मानित किया गया। श्री नन्दकिशोर जी जालान का लेख "२१वीं सदी के आयाम-२०वीं सदी से बिल्कुल भिन्न" पढ़कर मन बहुत ही उत्साहित हुआ। वास्तव में आज से ३-४ दशक पूर्व हमारे समाज की जो गरिमा देश-विदेश में थी वह धीरे-धीरे धूमिल होने लगी थी, परन्तु अब यह स्पष्ट प्रतित हो रही है कि पुन: हमारे समाज की प्रतिष्ठा देश-विदेश में बढ़ रही है। अब पुन: हमारे नौजवानों का ध्यान व्यापार की ओर आकृष्ट हो रहा है। अब हमारे समाज के युवाओं को चाहिए कि वे हर क्षेत्र में प्रभाव को स्थापित करें।

- कन्हैया डोकानिया, चनपटिया, बिहार

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के पदाधिकारीगण सत्र २००४-०६

अध्यक्ष
श्री मोहनलाल तुलस्यान

उपाध्यक्ष
श्री जगदीश प्रसाद अग्रवाल

उपाध्यक्ष
श्री ओंकारमल अग्रवाल

उपाध्यक्ष
डॉ. जय प्रकाश मुंदड़ा
विधायक

महामंत्री
श्री भानीराम सुरेका

उपाध्यक्ष
श्री सीताराम शर्मा

कोषाध्यक्ष
श्री हरिप्रसाद कानोड़िया

उपाध्यक्ष
श्री नन्दलाल रूंगटा

संयुक्त महामंत्री
श्री राज के. पुरोहित
(विधायक)

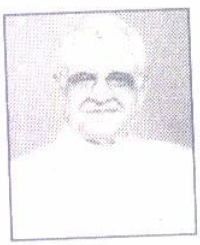

उपाध्यक्ष
श्री बालकृष्ण गोयनका

संयुक्त महामंत्री
श्री राम अवतार पोद्दार

समाज के हित में त्याग और समर्पण की जरूरत

✍ मोहन लाल तुलस्यान

लीक पर चलना बहादुरों का काम नहीं। जो बहादुर होते हैं वे नया रास्ता बनाते हैं। आज तक दुनिया में जो भी अन्वेषण हुए हैं वह बहादुरों के ही कमाल से संभव हुए हैं। कोलम्बस से पहले भी लोग थे पर किसी के मन में समुद्री यात्रा कर नये देश के संधान की बात नहीं आई थी। कोलम्बस ने साहस किया और समुद्री यात्रा पर निकल पड़ा। परिणामस्वरूप अमरीका की खोज हुई। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' ने ठीक ही लिखा है-

लक्ष्मण रेखा के दास तटों तक ही जाकर फिर जाते हैं।
वर्जित समुद्र में नाव लिए स्वाधीन वीर ही जाते हैं।

स्वाधीन वीर से यहां तात्पर्य उन वीरों से हैं जिनकी अपनी सोच होती है, जो किसी कार्य के लिए परमुखापेक्षी नहीं होते, जिनका अपना ध्येय होता है एवं उस ध्येय को पाने के लिए कठिनाइयों से लड़ने का आत्मबल होता है।

जीवन एक संग्राम है और इस संग्राम में जीत उनकी होती है जो परिस्थितियों से जूझकर उसे अपने अनुकूल बना लेते हैं। 'Survival of the fittest' का सिद्धांत इसी सत्य को उद्घाटित करता है।

जो समाज और राष्ट्र बदलती परिस्थितियों के अनुरूप अपने को ढालने में सक्षम है अस्तित्व उसी का बचा रहता है। जड़ समाजों का कोई भविष्य नहीं होता। नदी में प्रवाह है तो वह पुण्य सलिला बनी रहती है जबकि गड्ढे औ'नालाब का पानी स्थिर होने के कारण बदबूदार हो जाता है।

मारवाड़ी समाज के विकसित होने, फलने-फूलने का राज यही है कि यह समाज निरंतर प्रवहमान रहा है। रोजी-रोटी की तलाश में इस समाज के लोग एक जगह से दूसरी जगह जाते रहे हैं। अजनबी ठिकानों में अजनबी लोगों के साथ अपने को उस अनुरूप बनाया। एक उक्ति है- ''जीवन जीने की कला सबसे पहले एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने की कला है।'' मारवाड़ी राजस्थान, हरियाणा और मालवा से निकलकर पहले पूरे देश में और विश्व में फैले। जहां भी ये गये वहां की सभ्यता और संस्कृति को आत्मसात् किया। जिस काम को भी अपनाया उसमें पूरी तरह रम गये। नये-नये प्रयोग से उस काम को वैविध्यपूर्ण बनाया। कठोर परिश्रम, ईमानदारी, दूरदर्शिता एवं दूसरे समाजों के विकास में योगदान करने की मानसिकता ने इस समाज को पनपने में खाद का काम किया। मारवाड़ियों ने प्रमाणित किया कि

तेजस्वी सम्मान खोजते नहीं गोत्र बतलाकर
पाते हैं जग से प्रशस्ति अपना करतब दिखलाकर।

संकीर्ण भावनाओं से ऊपर उठकर समग्र मानवीय दृष्टि से मारवाड़ियों ने अपना विकास किया जिसके कारण इसके विकास में अड़चने कम आई। असंभव शब्द इनके शब्दकोष में रहा ही नहीं। जो ठान लिया उसे पूरा करके ही दम लिया।

इतिहास के पन्नों में इस समाज के शौर्य की गाथा स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है। व्यापार-वाणिज्य के अतिरिक्त भी हर क्षेत्र में इस समाज के लोगों ने अपना अमूल्य योगदान दिया है। देशभक्ति और राष्ट्रप्रेम के लिए इस समाज के लोगों ने जो किया वह इतिहास की धरोहर है।

ऐसे गौरवशाली इतिहास के रहते कोई समाज विस्मृति के गर्भ में चला जाए तो इससे बड़ी विडम्बना और क्या होगी ?

हमें इसी बिन्दु पर विचार करना है। हमें यह देखना है कि किन परिस्थितियों में हमारे पूर्वजों ने विकास का कीर्तिमान रचा और आज इक्कीसवी सदी में आधुनिकतम विज्ञान और तकनीक के दौर में, किन कारणों से हम पिछड़ रहे हैं।

आत्ममंथन एवं आत्म निरीक्षण के द्वारा ही हम यह जान सकते हैं कि हममें कमी कहां है। पिछले दिनों मुंबई में आयोजित १९वें राष्ट्रीय अधिवेशन के मौके पर हमने संकल्प लिया कि इक्कीसवीं सदी को मारवाड़ी समाज के उत्कर्ष की सदी बनानी है। यह गंभीर प्रयास की जरूरत रखता है। किसी एक या कुछ एक लोगों के सोचने करने से यह लक्ष्य हासिल नहीं होने वाला। इसे हासिल करने के लिए तो पूरे समाज को, चाहे वह देश या विदेश में कहीं भी हो, इस लक्ष्य के लिए एकजुट करना होगा।

यह असंभव तो नहीं है बशर्ते हम सब मिलकर इस दिशा में अग्रसर हों। इस लक्ष्य को पाने के लिए समवेत रूप में समाज के हित में त्याग और समर्पण की जरूरत है। अगर हममें त्याग और समर्पण की कमी होगी तो यह लक्ष्य असंभव है। मुझे एक शेर याद आता है-

अंधेरा मांगने आया था रोशनी की भीख
हम अपना घर न जलाते तो और क्या करते।

समाज सेवा में यही आदर्श स्थापित करना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए।

कविवर कन्हैयालालजी सेठिया पद्मश्री से अलंकृत

मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा अभिनंदन

मूर्द्धन्य साहित्यकार एवं मनीषी श्री कन्हैयालाल सेठिया को गणतंत्र दिवस के अवसर पर भारत सरकार ने उनकी राजस्थानी साहित्य एवं भाषा की सेवाओं के लिए पद्मश्री से अलंकृत किया है।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के लिए यह विशेष हर्ष एवं गौरव का विषय है। सम्मेलन के पदाधिकारियों ने उनके निवास स्थान पर जाकर उनका अभिनंदन किया। सम्मेलन वर्षों से राजस्थानी भाषा की संवैधानिक स्वीकृति के लिए श्री सेठिया के योगदान के लिए भारत सरकार से उन्हें सम्मानित करने का अनुरोध करता रहा है। भारत के उपराष्ट्रपति श्री भैरोंसिंह शेखावत की पिछली कलकत्ता यात्रा के दौरान सम्मेलन के प्रतिनिधि मण्डल को श्री शेखावत ने इस बात का आश्वासन दिया था। सम्मेलन उपराष्ट्रपति श्री शेखावत के प्रति आभार व्यक्त करता है।

श्री सेठिया ने कहा कि वे पिछले ६० वर्षों से राजस्थानी साहित्य की सेवा कर रहे हैं एवं उन्हें इस सम्मान प्राप्त करने पर खुशी है, लेकिन असली खुशी तभी होगी जब भारत सरकार

पद्मश्री कन्हैयालालजी सेठिया

श्री सेठियाजी का अभिनंदन करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान

श्री सेठियाजी के अभिनंदन में सम्मिलित सम्मेलन के प्रतिनिधिमंडल सर्वश्री मोहनलाल तुलस्यान, सीताराम शर्मा, भानीराम सुरेका, रामअवतार पोद्दार, रवीन्द्र कुमार लड़िया, प्रेम सुरेलिया, ओमप्रकाश अग्रवाल। साथ में श्री सेठिया के सुपुत्र श्री जयशंकर प्रसाद सेठिया।

राजस्थानी भाषा को आठवीं अनुसूचीं में सम्मिलित कर मान्यता प्रदान करेगी।

सम्मेलन के प्रतिनिधि मंडल में अध्यक्ष सर्वश्री मोहनलाल तुलस्यान, महामंत्री भानीराम सुरेका, निवर्त्तमान महामंत्री सीताराम शर्मा, कोषाध्यक्ष रामअवतार पोद्दार, रवीन्द्र कुमार लड़िया, प्रेम सुरेलिया, ओमप्रकाश अग्रवाल सम्मिलित थे।

श्री सेठिया से आशीर्वाद ग्रहण करते हुए सम्मेलन के नये महामंत्री श्री भानीराम सुरेका

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के १९वें अधिवेशन एवं दक्षिणांचल अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच के प्रथम अधिवेशन पर प्राप्त शुभकामनाएं

मुझे खुशी है कि अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन का १९वां राष्ट्रीय अधिवेशन एवं दक्षिण मध्य भारत का अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच का प्रथम अधिवेशन मुम्बई में ९ से ११ जनवरी, २००४ को हो रहा है। ऐसी संस्थाओं को समाज की उन्नति के लिए आगे आना चाहिए और देश व प्रदेशों के विकास में सरकार की सहभागिता के प्रयास करने चाहिए। मैं, इस अवसर पर प्रकाश्य स्मारिका के लिए हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

कैलाशपति मिश्र
राज्यपाल, राजस्थान
राजभवन जयपुर- ३०२००६

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन एवं अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच क्रमश: अपना १९वां व प्रथम राष्ट्रीय सम्मेलन ९-११ जनवरी, २००४ को मुम्बई में आयोजित कर रहे हैं तथा इस अवसर को चिरस्मरणीय बनाने हेतु एक स्मारिका का भी प्रकाशन किया जा रहा है। मारवाड़ी समाज के सर्वांगीण विकास हेतु उक्त संस्थाओं द्वारा किए जा रहे प्रयास प्रशंसनीय हैं। सम्मेलनों के सफल आयोजन एवं स्मारिका के सफल प्रकाशन की मैं कामना करता हूं।

प्रमोद महाजन

अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन १९वां राष्ट्रीय अधिवेशन एवं दक्षिणांचल अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच प्रथम अधिवेशन सम्मेलन के शुभ अवसर पर भारत का समस्त मारवाड़ी समाज एक छत के अंदर एकत्रित हो रहा है, यह बड़ी आनंद की बात है।

अधिवेशन की सफलता के लिए और युवा मंच को मेरी हार्थिक शुभकामनाएं।

मारवाड़ी समाज ने भारत को आर्थिक, व्यावसायिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में ऊंचा स्थान प्राप्त करने में योगदान दिया है। अपनी अलग कार्यकुशलता और संस्कृति से मारवाड़ी समाज ने अपनी विश्व भर में अलग पहचान कायम की है।

इस सम्मेलन में समाज के उद्धार के साथ-साथ पूरे हिंदुस्तान के उत्थान के लिए विचार होगा। और आये दिनों में समाज भारत के प्रगति के लिए गतिमान होगा। यह विश्वास मुझे है।

यह सम्मेलन बुरी प्रवृत्तियों को खत्म कर अच्छे संकल्प करके समाज को फलदायी होगा। युवा वर्ग को नेतृत्व देने, सबल बनाने, संस्कारित करने व समाज कार्य में जोड़ने के लिए इस सम्मेलन का महत्व अनन्य साधारण रहने के लिए इस सम्मेलन में प्रयास होगा। ऐसी मुझे आशा है।

आपके सामाजिक कार्य में और युवाओं के प्रगति के लिए होने जाने वाले कार्य में मेरा पूरा सहयोग रहेगा।

गोपीनाथ मुंडे
अध्यक्ष
भारतीय जनता पार्टी, महाराष्ट्र

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

१९वां खुला महाधिवेशन, मुंबई

९ से ११ जनवरी २००४

अधिवेशन समारोह की उत्सव मूर्ति राजस्थान की मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे समारोह को सम्बोधित करती हुई।

मारवाड़ी समाज की एकमात्र प्रतिनिधि संस्था के रूप में स्थापित अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन अपनी ६९ वर्षीय ऐतिहासिक जीवन-यात्रा में अविस्मरणीय क्षणों को आत्मसात् करते हुए इतिहास के पृष्ठों पर अद्वितीय संगठन का हस्ताक्षर सिद्ध हुआ है। समाज में परिवर्तन एवं राष्ट्र की मुख्यधारा में स्वयं को सम्बद्ध रखने के लिए इसके अनवरत प्रयास ने इसे जन-जन तक पहुंचाया है। समाज और राष्ट्रकी सेवा में अपने बहुआयामी भूमिकाओं का निर्वाह करते हुए सम्मेलन का अपना १९वां राष्ट्रीय अधिवेशन ९, १० एवं ११ जनवरी २००४ को देश की आर्थिक राजधानी, मां मुम्बादेवी की पावन नगरी मुम्बई में पूर्ण सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

इस अधिवेशन की सफलता एवं इसे गरिमा प्रदान करने का श्रेय उन सभी को है जो इस अधिवेशन को सफल बनाने के लिए मुम्बई पहुंचे और अपना सक्रिय योगदान दिया, देश के विभिन्न भागों से पहुंचे समाज के हित चिन्तक एवं स्थानीय भाई-बहनों ने अपना मूल्यवान सहयोग दिया इस अधिवेशन को सफलतापूर्वक अनुष्ठित करने में।

इस अधिवेशन को अपनी मधुर उपस्थिति एवं प्रेरणाप्रद सम्बोधन से गरिमा-मण्डित करने में सर्वप्रमुख हस्तियों में थे राजस्थान की मुख्यमंत्री श्रीमती बसुन्धरा राजे सिन्धिया, जोधपुर के पूर्व नरेश महाराजा गजसिंह, श्रीमती राजश्री बिड़ला, भारत सरकार के जहाजरानी राज्यमंत्री श्री दिलीप गांधी, माननीय श्री अब्दुल रहीम खत्री, राष्ट्रीय अध्यक्ष मोहनलाल तुलस्यान, निवर्त्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दकिशोर जालान, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व विधायक डॉ. जयप्रकाश मुंदड़ा, राष्ट्रीय महामंत्री श्री सीताराम शर्मा, प्रांतीय अध्यक्ष व विधायक श्री रमेश बंग, विधायक श्री राज के. पुरोहित, अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच के अध्यक्ष श्री बलराम सुलतानिया, अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन की राष्ट्र

अतिथि का पुष्पगुच्छ से स्वागत करते हुए महाराष्ट्र सम्मेलन के सक्रिय कार्यकर्ता श्री वीरेन्द्र प्रकाश धोका

ीय अध्यक्षा श्रीमती सावित्री बाफना आदि।

अधिवेशन समारोह की उत्सवमूर्त्ति श्रीमती वसुन्धरा राजे सिन्धिया ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभ उद्घाटन करते हुए कहा-

"हम राज करने नहीं जनता की सेवा करने आए हैं तथा राजस्थान के विकास में हम कोई कसर नहीं छोड़ेंगे, लेकिन जनता और प्रवासियों का भी सहयोग आवश्यक है। अगर आप थोड़ा-सा समय निकालकर वहां जाकर लोगों से मिलेंगे, परिवर्तन की बात करेंगे तो परिवर्तन होकर ही रहेगा। राजस्थान आपका है और राजस्थान आप ही हो। राजस्थान को आगे बढ़ाने की बात हो तो दूर बैठकर यह मत देखो कि राजस्थान में परिवर्तन कैसे हो रहा है।

राजस्थानी समाज ने देश के कोने-कोने में जाकर आर्थिक उन्नति के द्वार खोले हैं इसलिए कोई वजह नहीं है कि वे राजस्थान का काया-कल्प नहीं कर सकते।

अप्रवासी भाइयों ने दूर रहकर अपने बाहुबल से राजस्थान का नाम गौरवान्वित किया है। उसे मुख्यमंत्री की कोई जरूरत नहीं है। चलो, अपने घर चलें। आज राजस्थान की स्थिति पहले की तरह नहीं है। वहां आकर उद्योग स्थापित करें। राजस्थानी समाज ने राजस्थान में अनेकों स्कूल-कॉलेज खोले, अस्पताल बनाए, धर्मशाला और गोशाला बनाए पर अब यह फुटकर काम न करते हुए समाज योजना बनाकर राज्य में पूंजी निवेश करें। सरकार समाज की समस्याओं के निराकरण के लिए पूरा सहयोग देगी। मैं आपकी सेवा के लिए आपके बीच खड़ी हूं। मुझे जो ऊर्जा मिली है वह आपने दी है। आपने हमारे साथ अपना भविष्य बांधा है पूरे पांच साल के लिए। आधा रास्ता मैं चलूंगी, आधा रास्ता आप। तभी हमारे विकास की मंजिल प्राप्त करने का लक्ष्य हासिल हो पाएगा। आप तैयार हैं तो बोलें। आज कोई भी काम आपकी सहभागिता के बिना नहीं होने वाला है। मारवाड़ी समाज का महत्व है- दुनिया के अन्दर अपने देश के अन्दर। जुबान के साथ-साथ अपने हाथों को जोड़ें- कोई माई का लाल पैदा नहीं हुआ है जो राजस्थान के विकास को रोक सके।

हम जानते हैं कि राजस्थान का खजाना खाली है, लेकिन जब हम अपने घर पर कब्जा कर लेते हैं तो ये नहीं कहते हैं कि हमारा घर कंगाल है- हमारा घर खाली है। हमने कटोरी लेकर किसी से भीख नहीं मांगी थी और आने वाली पीढ़ी भी नहीं मांगेगी। घास की रोटी तो हमने पहले भी खायी थी पर हाथ नहीं फैलाया था। राजस्थान की इज्जत हमें सबसे प्यारी है। सत्य है कि बिजली-पानी की मुसीबतें हैं पर इसे जादू की तरह दूर नहीं कर सकते। हम दो रोटी खाकर कमर कसकर काम करेंगे और दुनिया में अपना झण्डा फहरायेंगे। हमारा रास्ता कठिन अवश्य है पर नामुमकिन नहीं।

मेरा निवेदन है कि राजस्थान को बनाना है तो जिस प्रकार अपने पसीने से छोटी-छोटी इण्डस्ट्री बनायी है, अपने परिवार को सींचा है उसी प्रकार से राजस्थान को भी सींचो। मेरी कोशिश होगी, विश्वास करें, हमारे कंधे पर आपने विश्वास की जो जिम्मेदारी डाली है आपके विश्वास और इज्जत को बरकरार रखने की कोई कसर नहीं उठा रखूंगी।

श्रीमती राजे एवं जोधपुर के पूर्व नरेश महाराजा गज सिंह स्मृतिफलक के साथ। साथ में हैं श्रीमती राजश्री बिड़ला, श्री दिलीप गांधी, रमेश बंग, भरत गुर्जर, ललित गांधी आदि

गली-गली में जब आपने चमन खिलाया है तो राजस्थान में क्यों नहीं। राजस्थान आइए।''

समारोह की सम्वर्द्धना में मुख्य अतिथि जोधपुर के पूर्व नरेश महाराज गजसिंह ने राजस्थानी भाषा में कहा :-

''आज का दिन बहुत बड़ा दिन है। वसुन्धराजी के सम्मान में जो समारोह आपने आयोजित किए उसमें मैं आपके साथ हूं। उन्होंने राजस्थान विकास में मारवाड़ियों को आगे आने का आह्वान करते हुए सरकार से अपील की कि वह राजस्थानी भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने के लिए व्यवस्था करें। साथ ही राजस्थान में उद्योग-धंधा स्थापित करने के लिए अनुकूल वातावरण बनाए। दूरदर्शी वसुन्धराजी उद्योग-धंधों की स्थापना में व्याप्त असुविधाओं को दूर कर बाहर बस रहे मारवाड़ी समाज को आकर्षित करने में अवश्य सफल होंगी। राजस्थान की संस्कृति और उसके विकास में प्रवासियों का बहुत बड़ा योगदान है। राजस्थान वीर प्रसूता भूमि तो है ही लेकिन वह भामाशाहों की भी भूमि है। राजस्थान की महत्ता को बनाए रखने के लिए सभी को मिलकर प्रयास करने होंगे।''

समारोह के विशिष्ट अतिथि व केन्द्रीय सरकार के जहाजरानी राज्यमंत्री श्री दिलीप गांधी ने समारोह को सम्बोधित करते हुए कहा :-

''आज गौरवशाली दिन है मारवाड़ी समाज के लिए जो कि उन्हें वसुन्धराजी, श्री भंवर सिंहजी, श्री जालान जी का स्वागत करने का अवसर प्राप्त हुआ। मारवाड़ी समाज का योगदान समाज और इतर समाज दोनों वर्गों को प्राप्त हुआ है। यह समाज जहां भी गया समाज सेवा एवं समरसता की भावना का अलख जगाया है। आज मारवाड़ी युवा मंच के प्रतिदानों से कौन अवगत नहीं है। इसने १०० से अधिक एम्बुलेंस, कैलिपर्स वितरण, रक्तदान शिविर, नेत्रदान शिविर, कृत्रिम अंग प्रत्यारोपण शिविर, हेपाटाइटिस बी टीकाकरण आदि समाज के लिए उपयोगी कार्यक्रमों को आयोजित कर सेवा के आदर्श को स्थापित किया है। फिर भी हमारे समाज में संगठन का अभाव है। समाज को पूर्णरूपेण संगठित करने के लिए हमें राजनीति के क्षेत्र में पदार्पण करना ही होगा। राजनीति के बगैर समाज कभी भी संगठित नहीं हो सकता। पर मेरा मानना है कि राजनीति के क्षेत्र में वही समाज संगठित रूप से टिकाऊ हो सकता है जो साफ-सुथरे लोगों को राजनीति में लाता है।

''सम्मेलन व युवा मंच ने कार्यकर्त्ता की ऊर्जा का सही उपयोग करके राष्ट्र व समाज को उन्नतिशील करने का जो बीड़ा उठाया है कठिन होने पर भी इसे पूर्ण करना आसान हो सकता है। यदि हम मानवता के प्रति सहानुभूति, सज्जनता तथा व्यक्तियों से प्रेम की भावना के साथ-साथ सहनशीलता, विशाल सहृदयता तथा विपरीत परिस्थितियों में विचलित न होने जैसे बुनियादी गुण आवश्यक रूप से अंगीकार कर लें।''

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान ने अपने जोशीले उद्बोधन में राजस्थान के वीर संतानों की महत्ता को प्रतिपादित

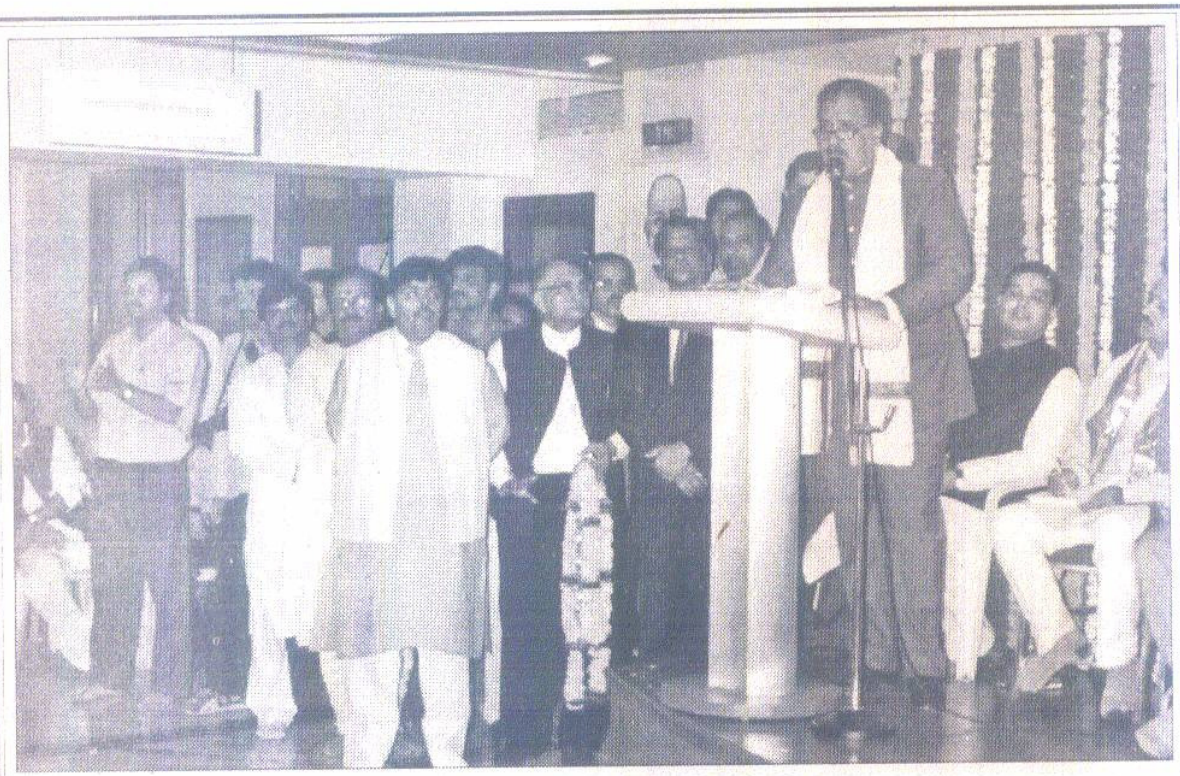

समारोह को सम्बोधित करते हुए महाराजा गज सिंह

करते हुए कहा :-

''राजस्थान की नारी ने एक से बढ़कर एक वीर संतानों को जन्म दिया है जिसने पूरे राष्ट्र का मान बढ़ाया है। स्वयं आज के समारोह की उत्सव मूर्ति वसुन्धराजी ने मारवाड़ी कौम का मान ऊंचा किया है। आज हम सबों के लिए अत्यन्त सौभाग्यप्रद क्षण है जो राजस्थान में हमें वसुन्धराजी जैसी कर्त्तव्यनिष्ठ, कर्मठ, दूरदर्शी और आधुनिक विचारों की नेत्री सुलभ हुई हैं। इनके नेतृत्व में राजस्थान का सर्वांगीण विकास अवश्यम्भावी है। मैं आदरणीय मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धराजी के सम्मुख अपनी तीन मांगें रखता हूं- प्रथमतः राजस्थानी भाषा को आठवीं अनुसूची में शामिल किया जाए, द्वितीयतः प्रवासी राजस्थानी समाज के मार्ग-दर्शन के लिए स्वतंत्र मंत्रालय बनाया जाए तथा तृतीय, राजस्थान में उद्योग-धंधे स्थापित करने के लिए अनुकूल वातावरण बनाया जाए। देश में आने वाली हर विपत्ति का राजस्थान ने सामना किया है, आगे भी करेगा।''

सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्रीमती राजश्री बिड़ला ने आज के समारोह में उन्हें आमंत्रित करने के लिए आयोजनकर्ता के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया।

आज के समारोह के अध्यक्ष श्री राज के. पुरोहित ने अपने सम्बोधन में कहा :-

''आज समाज के समक्ष बहुआयामी चुनौतियां हैं। एक तरफ तो वे लोग हैं जो समाज के अंग बनकर समाज की छवि को खराब करते रहें, दूसरी ओर वे लोग जो दिग्भ्रमित होकर समाज पर नापाक छींटे उछालते आये हैं। एक ओर लक्ष्मी का दुरुपयोग करके समाज को दूषित कर बदनामी के कगार पर लाने में सक्रिय इसकी कुछ गैर जिम्मेदार संतान है। तो दूसरी ओर इसकी समृद्धि को देखकर ईर्ष्या से पीड़ित कुंठित लोग।

त्रासदी यहीं खत्म नहीं होती। अभी तक हमारे समाज का सही मूल्यांकन करने की न तो किसी ने कोशिश की है न परवाह। बल्कि इसके विपरीत हमारी गलत छवि पेश की जाती रही है। इसकी जिम्मेदारी समाज की संतान पर ज्यादा है। वे क्यों बर्दाश्त करते हैं गैर जिम्मेदार लोगों की गैर जिम्मेदार हरकतें एवं उनके आपत्तिजनक वक्तव्य। वे उनका उचित उत्तर क्यों नहीं देते ?

यह सही है कि इस समाज का सबसे बड़ा योगदान उद्योग व व्यापार के क्षेत्र में है, जो कि किसी भी देश का महत्वपूर्ण अंक हैं। किन्तु मारवाड़ी का अर्थ मात्र पैसा नहीं है। अन्य बहुत से क्षेत्र में भी यह समाज स्वस्थ रूचि रखता है, और उन क्षेत्रों में अपनी सेवाएं अर्पित की है। यह बात भी हमें ही साबित करनी होगी और यह तब ही संभव हो सकता है जब हम समाज की उपलब्धियों का संतुलन प्रचार करें।

समाज के सभी क्षेत्रों के योग्य व्यक्तियों व उनके कार्यों को उचित सम्मान देते हुए एक संतुलित व स्वस्थ वातावरण तैयार करने की आवश्यकता है, जिससे कि समाज में संतुलित व स्वस्थ व्यक्तित्व आसानी से तैयार हो सके।

जब हमारा सर्वांगीण विकास होगा, तब हम शरीर, मन, बुद्धि व अर्थ से समान रूप से मालामाल होंगे और हम किसी भी चुनौती का बेझिझक सामना कर सकेंगे। इसके

श्रीमती राजे का अभिवादन करते हुए सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री सीताराम शर्मा एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान

अभाव में सुरक्षा के लिए या चुनौती को स्वीकार करने के लिए अन्य किसी पर आश्रित होना, नाजुक डाल पर घोंसला बनाने के समान है।

प्रवासी राजस्थानियों के मन में जो उत्साह का वातावरण है मुख्यत: यही कारण है कि वसुन्धराजी आज हमारे सामने मुख्यमंत्री के रूप में उपस्थित हैं। वसुन्धराजी ने तय किया था कि तीन महीने वे राजस्थान से बाहर नहीं जाएंगी, यहीं रहकर कार्य करेंगी परन्तु जब इन्हें ज्ञात हुआ कि मारवाड़ी सम्मेलन समाज की एक प्रतिनिधि संस्था है जो हर आपात्काल में समाजसेवा, जनसेवा में आगे रहती है तो ये स्वयं को आने से न रोक सकीं। आज हम इन्हें अपने मध्य पाकर गौरवान्वित हैं। हमें आशा है कि वसुन्धराजी के शासन-काल में राजस्थान अभूतपूर्व सफलता अर्जित करेगा।

श्री पुरोहित ने वसुन्धराजी के सम्मुख अपनी कुछ मांगें रखीं जिनमें मुख्य थे- राजस्थानी भाषा को आठवीं अनुसूची में शामिल किया जाए, प्रवासी राजस्थानियों की समस्या का समाधान हो, उनके पत्राचार का जवाब मिले, मुंबई में राजस्थानी सेंटर स्थापित हो, राजस्थान में अस्पताल, स्कूल बनवाने, कुल देवता-देवियों के दर्शन के लिए आने वालों को रेल की सुविधा मिले। उन्होंने राजस्थानी समाज को देश के उत्थान में अविस्मरणीय योगदान है बताते हुए श्रीमती राजश्री बिड़ला के प्रति आभार प्रकट किया।

समारोह को सम्बोधित करने वालों में अन्य प्रमुखतम व्यक्तियों में थे सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष सर्वश्री नन्दकिशोर जालान, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ. जयप्रकाश मुंदड़ा, राष्ट्रीय महामंत्री सीताराम शर्मा, प्रांतीय अध्यक्ष रमेशचंद बंग, युवा मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष बलराम सुलतानिया, भंवरसिंह, अतुल शाह, वीरेन्द्र प्रकाश धोका आदि।

इसके पूर्व आगत अतिथियों को माल्य विभूषित कर स्वागत-सम्वर्द्धना की गयी एवं उन्हें स्मृति चिह्न भेंट किए गए।

स्वागत सम्वर्द्धना में मेजबान महाराष्ट्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, महाराष्ट्र प्रादेशिक युवा मंच, महाराष्ट्र प्रादेशिक मारवाड़ी महिला सम्मेलन, आन्ध्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, गुजरात प्रादेशिक मारवाड़ी युवा मंच, उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन, झारखण्ड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन आदि सैंकड़ों शाखाओं एवं संस्थानों ने उत्सवमूर्ति मुख्यमंत्री श्रीमती राजे को पुष्पगुच्छ भेंट किए।

स्वागत उद्बोधन में युवा मंच के मंत्री श्री भरत गुर्जर ने कहा कि इस अधिवेशन के लिए कई लोगों ने हमें भामाशाह-सा सहयोग दिया है। दरअसल मुंबई को मुंबई में बसने वाले राजस्थानी समाज के लोगों ने ही बनाया है। उन्होंने वसुन्धराजी का स्वागत करते हुए बेहद खुशी बोध की और कहा कि उनका पहला कार्यक्रम राजस्थान के बाद महाराष्ट्र में हो रहा है।

समारोह के मध्य एक अत्यन्त ही उत्साहप्रद वातावरण में सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री सीताराम शर्मा को लगातार दो सत्र के उनके

राष्ट्रीय महामंत्री श्री सीताराम शर्मा के विदायी समारोह पर प्रदत्त रजत फलक। साथ में हैं कार्यकारिणी सदस्य श्री रवीन्द्र कुमार लड़िया, सम्मेलन के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री रामअवतार पोद्दार एवं राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री श्री भानीराम सुरेका

महाराजा गज सिंह, श्री रमेश कुमार बंग, श्री भरत गुर्जर आदि से अभिनन्दनोपहार ग्रहण करते हुए महामंत्री सीताराम शर्मा

कार्यकाल की सफल समाप्ति पर विदाई दी गई। सर्वप्रथम उन्हें कुंकुम तिलक लगाया गया। तदुपरान्त साफा पहनाकर एवं शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। विदाई स्वरूप उन्हें श्रीफल एवं रजत स्मृति चिह्न प्रदान किए गए। इस अवसर पर उपस्थित श्रीमती वसुन्धरा राजे, महाराजा गजसिंह, श्रीमती राजश्री बिड़ला, सर्वश्री दिलीप गांधी, डॉ. जयप्रकाश मुंदड़ा, रमेश बंग, मोहनलाल तुलस्यान, नन्दकिशोर जालान, राज के. पुरोहित, भरत गुर्जर, ललित गांधी, राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्यों, प्रादेशिक अध्यक्षों एवं मंत्रियों ने उन्हें पुष्पहार से लाद दिया।

श्री शर्मा ने उपस्थित सभी व्यक्तियों के प्रति आभार प्रकट करते हुए कहा :-

उनके साथी पदाधिकारी व सदस्यों के साथ एक अच्छा सामंजस्य ही इस कार्यकाल का सफलतापूर्वक निर्वाह करने में अहम् भूमिका निभायी है। पदाधिकारी आते-जाते रहते हैं पर संस्था स्थायी होती है। किसी के चले जाने से संस्था समाप्त नहीं हो जाती। अत: व्यक्ति को अपने निजी स्वार्थ व सम्बन्धों को गौण रखकर हमेशा संस्था के हित की ओर दृष्टि रखनी चाहिए। आगामी सत्र हेतु आने वाले पदाधिकारियों व कार्यकारिणी के प्रति मेरी शुभकामनाएं।

१० जनवरी की शाम मायावी नगरी मुंबई में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के १९वें राष्ट्रीय अधिवेशन एवं दक्षिणांचल अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच के इस प्रथम अधिवेशन की अध्यक्षता श्री राज के. पुरोहित ने की।

कार्यक्रम के संयोजक थे डॉ. जयप्रकाश मुंदड़ा, रमेशचंद बंग, दिलीप गांधी, भरत वी. गुर्जर। सहसंयोजक थे सर्वश्री वीरेन्द्र प्रकाश धोका, ललित गांधी, गोविन्द पारिख।

इस अवसर पर विशाल उपस्थिति में सरीक थे कोलकाता से सर्वश्री नन्दकिशोर जालान, रतन शाह, भानीराम सुरेका, विश्वनाथ प्रसाद कहनानी, रामअवतार पोद्दार, दीपचंद नाहटा सूर्यकरण सारस्वा, रवीन्द्र कुमार लड्ढिया, प्रेम सुरेलिया, सांवरमल भीमसरिया, सांवरमल अग्रवाल, ओमप्रकाश पोद्दार, आत्माराम तोदी, नन्दलाल सिंहानिया, बंशीलाल बाहेती, ओमप्रकाश अग्रवाल, शिवशंकर खेमका आदि। प्रादेशिक अध्यक्षों एवं पूर्व अध्यक्ष तथा प्रांत व शाखा सदस्यों में थे सर्वश्री रामकिशन गुप्ता (अध्यक्ष, आन्ध्र प्रदेश), विश्वनाथ मारोठिया (अध्यक्ष, उत्कल प्रदेश), लोकनाथ डोकानिया (अध्यक्ष, पश्चिम बंगाल), नन्दलाल रूंगटा (बिहार, पूर्व अध्यक्ष), डॉ. रमेश कुमार केजड़ीवाल, (अध्यक्ष, बिहार), जगदीश प्रसाद अग्रवाल (पूर्व अध्यक्ष, उत्कल), मौजीराम जैन (पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष), गोपाल कृष्ण जाखोटिया (महामंत्री, उत्कल), ओमप्रकाश खण्डेलवाल (महामंत्री, पूर्वांचल), गौरीशंकर अग्रवाल, नागरमल बाजोरिया (बिहार), किशनलाल अग्रवाल (उपाध्यक्ष, उत्कल), किशोरीलाल अग्रवाल (प्रां. संयुक्त महामंत्री, बिहार), विश्वनाथ केडिया (पूर्व उपाध्यक्ष, बिहार), महावीर प्रसाद अग्रवाल (पश्चिम चम्पारण), देवीप्रसाद डालमिया (झारखण्ड), रामरतन झंवर (आन्ध्र प्रदेश), हरिकिशन अग्रवाल, दामोदर सरवानी, जयदेव प्रसाद नेमानी (पटना), विश्वनाथ प्रसाद अग्रवाल, रामजीलाल भरतिया (प्रांतीय उपाध्यक्ष, बिहार), सीताराम बाजोरिया (प्रमंडलीय उपाध्यक्ष, तिरहुत, बिहार), दीनदयाल डालमिया (झारखण्ड) आदि-आदि।

श्रीमती वसुंधरा राजे का अभिवादन करते हुए राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री श्री भानीराम सुरेका

अधिवेशन समारोह को गौरवान्वित करते हुए सर्वश्री विश्वनाथ मारोठिया, लोकनाथ डोकानिया, नंदलाल रुंगटा आदि एवं विभिन्न प्रांतों से आये सदस्यवृन्द

अधिवेशन समारोह में कोलकाता से पधारे सदस्यवृन्दों में सर्वश्री सांवरमल भीमसरिया, जयगोविंद इंदोरिया, सांवरमल अग्रवाल, सूर्यकरण सारस्वा, बंशीलाल बाहेती, ओमप्रकाश अग्रवाल, नंदलाल सिंघानिया आदि

उद्घाटन समारोह

९ जनवरी, तेरापंथी भवन, सायं ६ बजे

दीप प्रज्ज्वलित कर अधिवेशन का उद्घाटन करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान परिलक्षित हैं सर्वश्री वीरेन्द्र प्रकाश धोका, भरत गुर्जर, ललित गांधी, राज के पुरोहित, सीताराम शर्मा, रमेश चंद बंग, जय प्रकाश मुंदड़ा, दिलीप गांधी, बलराम सुल्तानिया आदि

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का १९वां राष्ट्रीय महाधिवेशन एवं दक्षिणांचल अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच का प्रथम अधिवेशन का उद्घाटन समारोह ९ जनवरी की शाम मुम्बई के तेरापंथी भवन के एक बड़े हॉल में सदस्यों व सम्भ्रांत नागरिकों की भारी उपस्थिति में आयोजित किया गया। इस समारोह का शुभ उद्घाटन केन्द्रीय जहाजरानी राज्य मंत्री श्री दिलीप गांधी ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। समारोह की अध्यक्षता सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं जनप्रिय विधायक डा. जयप्रकाश मूंदड़ा ने की।

अपने उद्घाटन वक्तव्य में श्री गांधी ने कहा- **सन् १९३५ में वोट के अधिकार के मुद्दे पर सम्मेलन की स्थापना हुई थी। पहले की परिस्थिति और आज की परिस्थिति में बहुत अन्तर है। आज हमने समाज को एकबद्ध करने की भूमिका बखूबी निभाई है। हम अलग-अलग स्थितियों में रहते हुए भी आपस में एक साथ जुड़े हुए हैं यही तो सम्मेलन की सबसे बड़ी शक्ति है। यही तो संगठन है। संगठन के कारण एक दूसरे का विश्वास बढ़ता है। परस्पर विश्वास ही संगठन को मजबूती प्रदान करता है। परिस्थिति का प्रभाव मानव समाज पर बहुत गहरे रूप से पड़ता है। उसी प्रकार संस्कृति का भी। महिलाओं ने, युवाओं ने अलग-अलग क्षेत्र में कार्य कर समाज को आगे बढ़ाया। इसे और आगे बढ़ाने के लिए नींव को मजबूत करनी होगी। एक दिन में ही आजादी नहीं मिलती। वर्षों के प्रयास की जरूरत होती है।**

आज जो कुछ भी हमारे अन्दर परिवर्तन हुआ है वह समाज की देन है। जैसे-जैसे समाज व्यवस्था बदलती गई, परिवर्तन का रुख भी हमारे सामने आया और हम उन्नति की दिशा में अग्रसर हुए। आज हम संगठन की बदौलत यह नि:संकोच कहते हैं गर्व से कहो हम मारवाड़ी हैं। जबकि कुछ वर्षों पहले हमें मारवाड़ी कहने में शर्म लगती थी।

सेवा के क्षेत्र में मारवाड़ी समाज एक पैसा का हेरा फेरी नहीं करता बल्कि अपनी जेब से पैसा लगाकर कमी को पूरा करता है। स्वतंत्रता संग्राम में भी मारवाड़ी समाज की अग्रणी भूमिका रही है। अनेकों ने शहादत दी है। हमारे समाज में व्याप्त अच्छाई को दिग्दर्शित करना है तथा इसके साथ-साथ अन्य समाज की अच्छाई को भी हमें अनदेखा नहीं करना है। समरसता का यही सबसे बड़ा उदाहरण होगा।

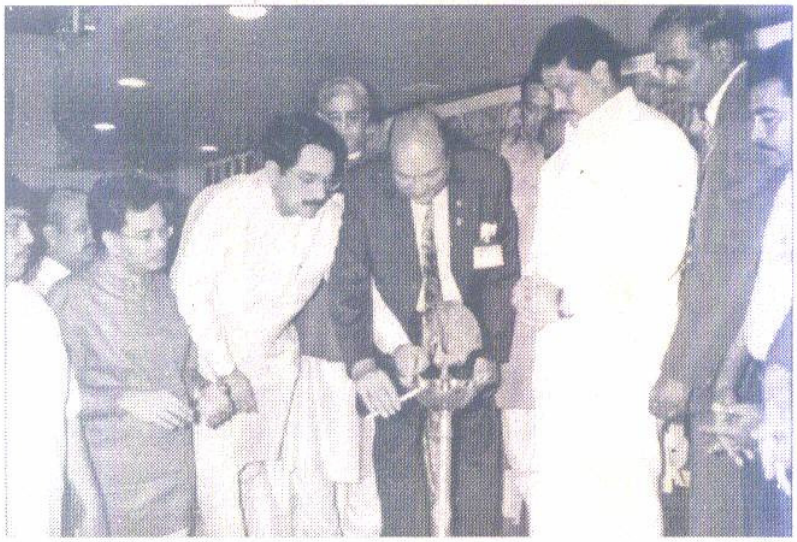

दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन करते हुए श्री मोहनलाल तुलस्यान

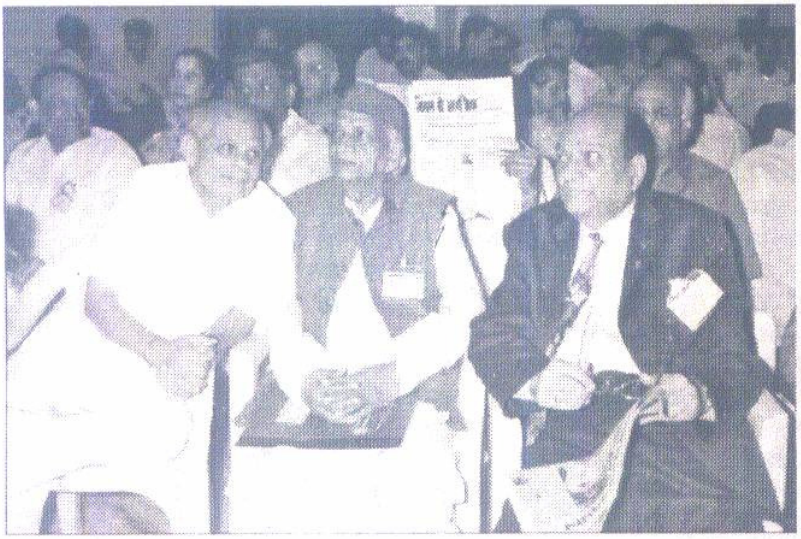

समारोह में उपस्थित सदसयवृन्दों के मध्य श्री मोहनलाल तुलस्यान

सम्बन्ध जोड़कर ही संगठन को बरकरार रख सकते हैं।

विधायक राज के पुरोहित ने कहा- देश की सबसे पुरानी मारवाड़ी संस्था है तो वह है अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन। महाराष्ट्र के मारवाड़ी समाज में जो बात है वह और जगह नहीं है। कहीं न कहीं इनमें कोई न कोई विशिष्टता अवश्य है क्योंकि आज महाराष्ट्र में ही सबसे अधिक मारवाड़ी मिनिस्टर्स एवं कैबिनेट मिनिस्टर्स हैं। इसे समाज सेवा के हर क्षेत्र में बड़प्पन हासिल है। झारखण्ड की १०० से अधिक स्कूलें यहीं से चलती हैं। भुज भूकम्प राहत में ३ करोड़ ६० लाख रुपये यहीं से दिये गये थे जिसमें से ९९% मारवाड़ी समाज से थे। कारगिल कोष में भी ९०% पैसा मारवाड़ियों ने ही प्रदान की थी। वैसे तो मारवाड़ी समाज की कोई सीमा नहीं है फिर भी एक ऐसा कार्यक्रम हो जो पूरे देश के वातावरण को सकारात्मक रूप दे सके।

युवा मंच के राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सर्वाधिक सक्रिय व्यक्तित्व एवं अधिवेशन समारोह के सह संयोजक श्री वीरेन्द्र प्रकाश धोका ने कहा-

देश के प्रमुख सामाजिक संगठनों में अपनी सर्वोपरि पहचान रखने वाला संगठन अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच के दक्षिणांचल क्षेत्र के संगठन का एक छोटा सा कार्यकर्ता हूं तथा मैंने इस संगठन को शैशवकाल से युवावस्था में तबदील होते हुए देखा है, इतना ही नहीं, आडवाणी एवं वाजपेयीजी भी राजस्थानी भाषा को राष्ट्रीय भाषा देने की इच्छा रखते हैं। सौभाग्य से हमारे बीच राजस्थान की मुख्यमंत्री पधार रही हैं। हमें एक प्रस्ताव पारित कर उन्हें देना चाहिए। अधिवेशन से हमें क्या-क्या उपलब्धि हुई इसका भी अवलोकन करना चाहिए। सौभाग्य है कि इतने महान विभूतियों के मध्य अपना विचार प्रकट करने का मौका मिला।

इस अवसर पर विधायक एवं राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डा. जय प्रकाश मूंदड़ा ने कहा-

दक्षिणांचल की इस मायावी नगरी में सभी का स्वागत है। अधिवेशन क्यों आवश्यक है- समाज की त्रुटियों को समझना, उसे दूर करना यही अधिवेशन का मुख्य लक्ष्य होता है। सम्मेलन की शाखाएं कैसे बढ़े इस पर ध्यान रखना चाहिए। हमें अपनी संस्कृति की हमेशा मर्यादा करते हुए मर्यादा के अन्दर ही रहना चाहिए। सभा का आयोजन अधिक से अधिक हो ताकि हम अधिकतम बार मिल सकें और अपनी समस्याओं को रख सकें, समझ सकें। हमारे समाज का देश की आर्थिक स्थिति सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। हमारे समाज का संगठन बढ़े तभी हम सुविधाएं हासिल कर सकते हैं और देश तथा समाज का कल्याण कर सकते हैं। छत्रपति शिवाजी सिसोदिया घराने से थे और सिसोदिया घराना राजस्थान से था। इस प्रकार महाराष्ट्र और राजस्थान का एक गहरा सम्बन्ध है। संस्कृति कायम रखनी चाहिए परन्तु इसके साथ-साथ जहां हम बसे हैं वहां की संस्कृति से

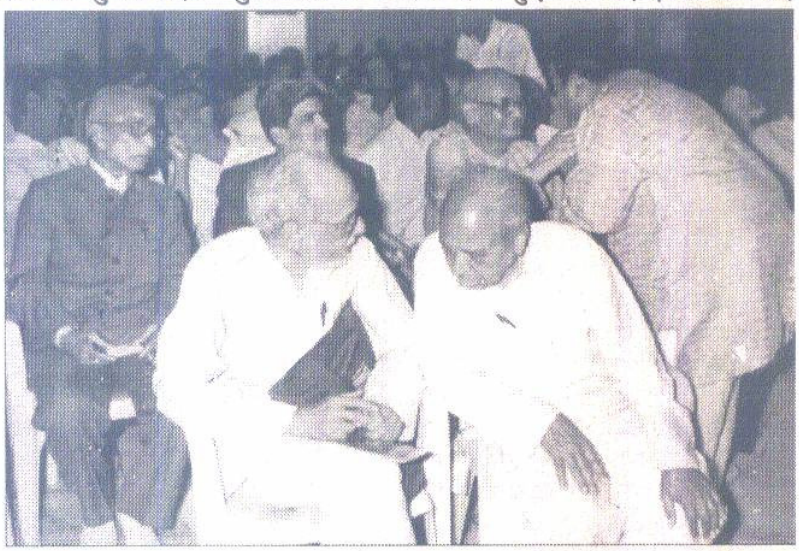

समारोह में उपस्थित सर्वश्री नंदकिशोर जालान, दीपचंद नाहटा, गीतेश शर्मा, डा. वेंकटशर्मा आदि

संगठन के उतार चढ़ावों को भी मैंने नजदीक से अनुभव किया है। मैं उन शुभचिंतकों की त्याग भावना को नमन करता हूं जिन्होंने इस संगठन को अपने लहू से सींचा है। संगठन के प्रगति पथ में आई अनेक विपरीत परिस्थितियों का दृढ़ता से सामना करते हुए आज इस संगठन को इस ख्याति तक पहुंचाया है जहां आप गर्व से सिर उठाकर कह सकते हैं कि हमारे समाज की एक स्वयंसेवी संस्था है मारवाड़ी युवा मंच जिसने देश व समाज के लिए ऐतिहासिक कार्य किये हैं।

यही वह संगठन है जो समाज को उसका सम्मान एवं सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए कटिबद्ध है। यह संगठन बिना किसी भेद-भाव के पिछले पच्चीस वर्षों से जन-कल्याण के कार्यों में तन-मन धन से लगा हुआ है। आज इस संगठन की पूरे भारतवर्ष में १२० एम्बुलेंस सेवाएं सड़कों पर २४ घंटे निर्बाध रूप से दौड़ रही है तथा इस संगठन का स्वयं का पश्चिम बंगाल के सिलीगुड़ी शहर में विशाल राष्ट्रीय विकलांग सेवा केन्द्र कार्यरत है जहां विकलांग व्यक्तियों के लिए कृत्रिम पैर व कैलीपर के निर्माण के साथ साथ विकलांग भाईयों को नि:शुल्क कृत्रिम पैर व कैलीपर प्रत्यारोपित कर आत्मनिर्भर बनाने का कार्य हो रहा है। इसके अलावे दिल्ली में अनुसंधान केन्द्र जहां आधुनिक तकनिक का प्रयोग करते हुए सुविधायुक्त व आरामप्रद उत्तम किश्म के कृत्रिम पैरों के निर्माण की तकनीक ईजाद करने का कार्य चल रहा है। जब भी देश के किसी क्षेत्र में कोई त्रासदी आई यह संगठन अपने युवाओं की फौज के साथ सेवा में सदैव तत्पर रहा, चाहे लातुर का भूकम्प रहा हो या गुजरात का, उड़ीसा का सुपर साइक्लोन रहा हो या असम, पश्चिम बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश में बाढ़ की विभिषिका या पश्चिम बंगाल में गईसाल की रेलदुर्घटना २५ साल के इस लंबे अंतराल में अनेक उपलब्धियां इस संगठन ने अर्जित की है। जिनकी सीढ़ी दर सीढ़ी व्याख्या करना मेरे लिए कठिन कार्य होगा।

इस महत्वपूर्ण अधिवेशन को आयोजित करने का अहम् उद्देश्य यही है कि दक्षिणांचल क्षेत्र के समाज के युवा इस संगठन के बारे में करीब से जाने एवं समाज व राष्ट्र के प्रति अपने नैतिक दायित्व को केन्द्रित कर कुछ कर दिखाने की तमन्ना रखने वाले युवा इस मंच पर आए, यह मंच आपके लिए एक सटीक राह प्रशस्त करेगा। आपकी कृति व त्याग को मंच इतिहास में सदैव जीवंत रखा जायेगा। समाज के ऐसे युवा जिनमें समाज व देश के लिए कुछ करने का दर्द है, उनके लिए इस संगठन के दरवाजे सदैव खुले हैं तथा यह संगठन ऐसे युवाओं का स्वागत करता है। इस अधिवेशन में सरीक होने वाले सभी भाईयों से मेरा आग्रह रहेगा कि समाज के युवाओं को इस संगठन से जोड़ने के कार्य में अपना बहुमूल्य योगदान देकर संगठन की शक्ति को फौलादी स्वरूप दे।

बालों की सफेदी तजुर्बा नहीं है।
पथरीले पथ की यात्रा ही तजुर्बा है।

अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री बलराम सुलतानिया ने कहा-

अधिवेशन का मुख्य उद्देश्य दक्षिणांचल क्षेत्र में मंच के प्रसार के साथ-साथ मंच आंदोलन को एक नई दिशा प्रदान करना है। यहां दक्षिणांचल क्षेत्र से तात्पर्य महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक, गुजरात, पांडिचेरी, गोवा, लक्ष व दमन द्वीप से है, इन सभी प्रांतों से पधारे प्रतिनिधियों को आपसी समन्वय कायम करने एवं एक-दूसरे के विचारों को जानने तथा संगठन के प्रसार की संभावनाओं को मूर्त रूप देने में इस अधिवेशन को एक सेतु के रूप में देखा जा रहा है। इस तरह का यह पहला एवं अनूठा प्रयास है जब दक्षिणांचल क्षेत्र के सभी प्रांतों के प्रतिनिधियों को एक मंच पर एकत्रित होने का सुअवसर प्राप्त हो रहा है। इस अवसर पर उपस्थित हुए प्रतिनिधियों से मेरा यही आह्वान है कि सभी प्रतिनिधि अधिवेशन के सभी सत्रों में पूरी निष्ठा के साथ भाग लें तथा अपने दूरगामी एवं अनुभवी विचार व्यक्त कर संगठन के विकास की संभावनाओं को मूर्त स्वरूप देने में यथाशक्ति योगदान देकर समाज व राष्ट्र के प्रति अपने दायित्वों के निर्वाह की सीढ़ी तैयार करें।

यहां आपको यह बताना जरूरी समझता हूं कि अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच की आज पूरे राष्ट्र में ४०० से अधिक शाखाएं कार्यरत हैं तथा आज के दौर में देश के प्रमुख संगठनों में मारवाड़ी युवा मंच संगठन अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। देश के जिन प्रान्तों में अपने समाज का बाहुल्य है वहां के प्रमुख प्रान्त असम, पश्चिम बंगाल, बिहार, झारखण्ड, उत्तर प्रदेश, उड़ीसा, छत्तीसगढ़, आन्ध्र प्रदेश में भी प्रान्तीय इकाईयों का सूत्रपात होने जा रहा है। अब हमारा लक्ष्य तमिलनाडु, केरल, गोवा, लक्ष व दमन दीप हैं, इन प्रान्तों में रह रहे समाज के युवा वर्ग को शामिल करने की हमारी विशेष प्राथमिकता है, इतना ही नहीं नारी शक्ति की भूमिका को भी केन्द्रित करते हुए अधिक महिला एवं युवतियों को मंच परिवार में शामिल करने के लिए मंच परिवार कटिबद्ध है।

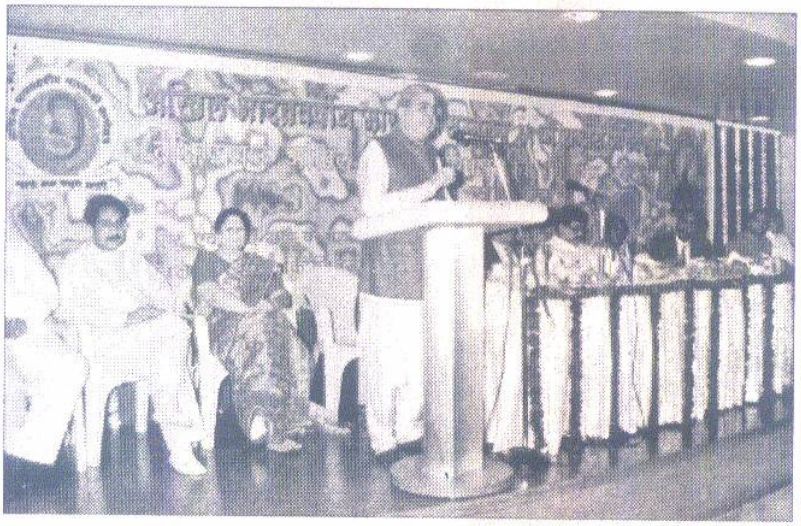

प्रतिवेदन पढ़ते हुए महामंत्री श्री सीताराम शर्मा

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री सीताराम शर्मा ने समारोह को सम्बोधित करते हुए कहा-

१९४७ में स्व. बृजलाल बियानी की अध्यक्षता में मुम्बई में पहला अधिवेशन हुआ था एवं लगभग ३२ वर्षों के उपरान्त दूसरा अधिवेशन १९७९ में मेजर राम प्रसाद पोद्दार की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ था। आज २४ वर्ष बाद २००४ में सम्मेलन का यह तीसरा अधिवेशन सम्पन्न हो रहा है। हर अधिवेशन ने सम्मेलन को एक नयी धारा दी है। १९४७ में बम्बई अधिवेशन में यह निर्णय हुआ था कि सम्मेलन मात्र सामाजिक विषयों पर कार्य करेगा। आज २००४ में इसका स्वरूप हमारे सामने आया है। वे निर्णय बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुए हैं। यह हमारे पूर्व अध्यक्षों की दूरदर्शिता का ही फल है।

अपने शैशवकाल में सम्मेलन ने पर्दा प्रथा, बालिका शिक्षा निषेध, दहेज आदि सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध क्रांतिकारी आन्दोलन को मुखर किया था। आज यह समाज सुधार, सुरक्षा व समरसता के प्रसार में कार्यरत है। सम्मेलन मारवाड़ी समाज की एक प्रतिनिधि संस्था है। यह मात्र समाज की प्रशंसा ही नहीं करता है अपनी खामियों की तरफ भी नजर रखता है उसे दूर करने का प्रयास करता है।

सीताराम रुंगटा राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार के तहत ११,००० रुपये का का चेक डॉ. वेंकटशर्मा को प्रदान करते हुए महामंत्री श्री सीताराम शर्मा। मंच पर उपस्थित हैं सर्वश्री नंदलाल रुंगटा, मोहनलाल तुलस्यान, दिलीप गांधी एवं डॉ. जयप्रकाश मुंदड़ा

हमें अपने उद्देश्यों के प्रचार-प्रसार व क्रियान्वयन के दौरान अनेकों समस्याओं से भी जूझना पड़ा है। परन्तु आज की समस्या नये रूप में उभरी है।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन मात्र सेवा संस्था ही नहीं है। यह एक विचार प्रधान संस्था भी है। सम्मेलन समाज को हर समय हर क्षेत्र में और हर स्तर पर नये परिवर्तनों के अनुसार अपने कर्त्तव्य और उत्तरदायित्व का युगबोध कराता रहा है। यह समाज को विचार देता है। इसकी तस्वीर हाथों-हाथ उजागर नहीं होती है इसका असर बाद में दिखाई देता है। यह अधिवेशन भी समाज के लिए मील का पत्थर साबित होगा।

मारवाड़ी सम्मेलन का प्रधान कार्य है मारवाड़ी समाज की सुरक्षा। राष्ट्र के किसी भी भाग में मारवाड़ी समाज पर हुए जुल्म और अत्याचार का सम्मेलन ने हमेशा ही पुरजोर विरोध किया है। अपने विरोध के स्वर को इसने सरकार तक न सिर्फ पहुंचाया है बल्कि उसके पटाक्षेप की भी मांग की है। दूसरा है समाज सुधार। यह एक निरन्तर प्रक्रिया है, जिसके नतीजे कई-कई दशकों के बाद परिलक्षित होते हैं। तीसरा है समरसता। मारवाड़ी समाज जहां भी बसे उनका वहां के लोगों से समरसता हो। महाराष्ट्र के मारवाड़ी समाज में समरसता का चमत्कारिक रूप देखने को मिला है। महाराष्ट्र के मारवाड़ी समाज ने खान-पान, रहन-सहन, वेश-भूषा आदि से स्थानीय समरसता का अद्‌भुत उदाहरण पेश किया है।

सम्मेलन ने बंगाल में ऐसे बंगाली साहित्यकार को पुरस्कृत किया है जिसने मारवाड़ी समाज की श्रीवृद्धि की है, राजस्थान पर अपनी लेखनी चलायी है।

अधिवेशन में सारे प्रान्त से लोग आते हैं, देखते हैं और कुछ सीखते हैं। आज भी देश के विभिन्न कोने से आने वाले प्रतिनिधियों का मैं अभिनन्दन करता हूं। प्रान्त सक्रिय है, शाखा सक्रिय है, जिला सक्रिय है तो सम्मेलन भी सक्रिय होगा।

आज हमारे साथ उपस्थित हैं सम्मेलन के महाप्राण, सर्वाधिक हितैषी, अर्द्धशती से युवा सेवक श्री नन्द किशोर जालान, वयोवृद्ध पूर्व महामंत्री श्री दीपचंद जी नाहटा, जिनका कि कुछ माह पूर्व ही २५ दिसम्बर को स्थापना दिवस के अवसर पर अभिनन्दन किया गया था, जिनका सम्मेलन से वर्षों से सहयोग और सम्बन्ध रहा है श्री गीतेश जी शर्मा जिन्हें कि भंवरमल सिंघी पुरस्कार के लिए चयन किया गया है, जोधपुर से पधारे अपनी लेखनी से राजस्थानी साहित्य को धनी बनाने वाले ८० वर्षीय डा. वेंकट शर्मा जिन्हें कि सीताराम रुंगटा राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा, रतन शाह, भानीराम सुरेका, विश्वनाथ कहनानी, रामऔतार पोद्दार, ओम प्रकाश पोद्दार आदि पधारने वाले कार्यकारिणी सदस्य, प्रान्तीय अध्यक्ष एवं मंत्रीगण।

आप सबके प्रति आभार प्रदर्शित करता हूं। विशेषकर महाराष्ट्र प्रा. मारवाड़ी सम्मेलन के कार्यकर्ताओं एवं पदाधिकारीगण को जिन्होंने दूर-दूर से आये प्रतिनिधियों केलिए रहने खाने की उत्तम व्यवस्था कर हमें कृतार्थ किया है।

इसके पूर्व महामंत्री श्री सीताराम शर्मा ने राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार के लिए चुने गए जोधपुर के डा. वेंकट शर्मा का जीवन परिचय पढ़कर सुनाया। अपनी लेखनी से राजस्थानी भाषा को समृद्ध करने वाले डा. शर्मा को महिला सम्मेलन की राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती सावित्री बाफना ने कुमकुम तिलक लगाकर अभिनन्दन किया। तत्पश्चात् राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान द्वारा साफा पहनाकर, प्रान्तीय अध्यक्ष श्री रमेश बंग द्वारा शॉल ओढ़ाकर एवं राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डा. जयप्रकाश मूंदड़ा द्वारा श्रीफल देकर उनका स्वागत किया गया। पुरस्कार स्वरूप उनके करकमलों में ११ हजार रुपये का ड्राफ्ट एवं रजत फलक प्रदान किया राष्ट्रीय महामंत्री श्री सीताराम शर्मा एवं मुख्य अतिथि श्री दिलीप गांधी ने।

इस अवसर समारोह को सम्बोधित करते हुए डा. शर्मा ने कहा- **सम्मेलन इस तरह के आयोजन यात्रा में निरन्तर आगे बढ़ता रहे, विश्व में अपना नाम करे। सम्मेलन आयुष्मान भवः, यशस्वी भवः।**

भंवरमल सिंघी समाजसेवा पुरस्कार प्राप्तकर्ता सुप्रसिद्ध पत्रकार श्री गीतेश शर्मा को पगड़ी पहना कर अभिनन्दित करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान। परिलक्षित हैं महिला सम्मेलन की अध्यक्षा श्रीमती सुशीला बाफना।

सम्मेलन का दूसरा पुरस्कार भंवरमल सिंघी समाज सेवा पुरस्कार के लिए चयन किये गए सुप्रसिद्ध पत्रकार एवं समाज सेवी तथा भंवरमल सिंघी के अंतरंग सहयोगी श्री गीतेश शर्मा का जीवन परिचय महामंत्री श्री सीताराम शर्मा ने पढ़कर सुनाया।

श्री गीतेश जी के मस्तक पर भी श्रीमती बाफना ने कुमकुम तिलक अंकित किया, डा. जयप्रकाश मूंदड़ा ने श्रीफल व श्री रमेश बंग ने शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया। साफा श्री मोहनलाल तुलस्यान ने पहनाया। ११ हजार राशि का चेक तथा रजत फलक प्रदान किया सम्मेलन के पूर्व सभापति श्री नन्दकिशोर जालान तथा केन्द्रीय मंत्री श्री दिलीप गांधी ने।

इस अवसर पर श्री गीतेश शर्मा ने कहा- **मैं मानवतावादी हूं, कई सामाजिक व राष्ट्रीय आंदोलनों से जुड़ा रहा हूं, आगे भी रहूंगा। मैं सम्मेलन का आभारी हूं क्योंकि मैं अपने घर में सम्मानित हुआ हूं।**

कार्यक्रम के सर्वशेष में राष्ट्रीय सभापति श्री तुलस्यान जी ने अपने वक्तव्य में कहा- **सर्वश्री वेंकटेश शर्मा एवं गीतेश शर्मा ने आज के पुरस्कार को स्वीकृत कर हमें गौरवशाली बनाया है अतः हम उनके प्रति आभार प्रकट करते हैं।**

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के १९वें राष्ट्रीय अधिवेशन की पूर्व बेला पर राष्ट्रीय अध्यक्ष के नाते मुझसे जो आशा एवं अपेक्षा समाज को है, और होना भी चाहिए, उसे पूरा करने के लिए यह जरूरी है कि पूरे समाज को इस बात के लिए प्रेरित किया जाए कि इक्कीसवीं सदी में मारवाड़ी समाज की भूमिका स्पष्ट करें एवं जो लक्ष्य निर्धारित हो उसे पाने के लिए समवेत प्रयास शुरू किये जाये।

हमें यह बात पहले अपने मन में बिठा लेनी होगी कि सम्मेलन का जन्म और इसका विकास प्रवासी मारवाड़ी समाज के हितों की रक्षा एवं समाज सुधार के जरिए एक आधुनिक समाज निर्माण के लिए हुआ था। १९३५ में जब सम्मेलन की स्थापना हुई तब प्रवासी राजे-राजवाड़ों को मतदान का अधिकार नहीं था। सम्मेलन के मंच से जब उनके मतदान के अधिकार की बात कही गयी तो उन्हें यह अधिकार मिला। इसके बाद सम्मेलन समाज सुधार की दिशा में अग्रसर हुआ। तात्कालिक मारवाड़ी समाज अनेक प्रकार की रूढ़ियों, कुसंस्कारों, कुप्रथाओं के भंवर जाल में फंसा हुआ था। समाज में शिक्षा की कमी थी। कन्या शिक्षा का तो और बुरा हाल था। ऐसी परिस्थिति में सम्मेलन के मंच से समाज में जागृति का शंख फूंका गया। रूढ़ियों, कुसंस्कारों पर प्रहार किये गये। पर्दा प्रथा को खत्म करने के प्रयास में कार्यकर्ताओं ने अपमान के घूंट पिये। कन्या शिक्षा के प्रचार-प्रसार की कोशिश में बहुत-सी बाधाओं का सामना करना पड़ा। व्यापार के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों में मारवाड़ी समाज के लोगों की पैठ बनाने के लिए सम्मेलन को लंबा आंदोलन करना पड़ा।

आज सम्मेलन के मंच से किये गये आंदोलनों का फल हमारे समक्ष है। बताने की जरूरत नहीं कि हमारे समाज की बहू-बेटियां आज पर्याप्त शिक्षित है। वे जीवन के हर क्षेत्र में पुरुषों से होड़ ले रही हैं। हमारे समाज के पुरुष भी व्यापार के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों में प्रतिष्ठित हैं। राजनीति, शिक्षा जगत, उद्योग से लेकर उप राष्ट्रपति पद जैसे गौरवपूर्ण स्थान तक मारवाड़ी समाज की पैठ बढ़ी है।

यह सम्मेलन के दीर्घकालीन आंदोलनों का सुफल है। कोई कह सकता है कि सम्मेलन जमीनी लड़ाई से दूर है। मगर मेरा मानना है कि सम्मेलन हमेशा समाज सचेतक रहा है। समाज को परिस्थितियों के अनुसार दिशानिर्देशन करना सम्मेलन का प्राथमिक दायित्व है। सम्मेलन ने अपने इस

दायित्व का हमेशा पालन किया है।

आज समाज में विसंगतियों के बढ़ते जाने से लोग चिंतित हैं। चिंतित होना भी चाहिए। आखिर जिनका समाज से सरोकार है, जिन्हें अपनी सामाजिक पहचान बनाये रखनी है, उनका सामाजिक विसंगतियों के प्रति चिंतित होना शुभ लक्षण माना जाना चाहिए। मगर यहां एक बात और महत्वपूर्ण है और वह है-विसंगतियों को दूर करने के लिए अपनी भूमिका का निर्धारण।

अगर हम समाज की विसंगतियों पर सिर्फ चिंता ही करेंगे तो समाज का सुधार कैसे संभव है। समाज में परिवर्तन तो तब आता है जब समाज को सुधारने की मंशा रखने वाले लोग एक मंच पर एकजुट हों तथा सम्मिलित रूप से आंदोलन करने की उनकी मानसिकता हो। टुकड़ों-टुकड़ों में बंटकर बड़ी सामाजिक व्याधियों पर विजय पाने की कामना हास्यास्पद है। हमें अपने समाज के हित में, सामाजिक कुरीतियों को खत्म करने के लिए सबसे पहले अपने मन की संकीर्णता को खत्म करना होगा। हमें अपने मन में यह बात बिठा लेनी होगी कि हम मारवाड़ी हैं एवं हर कीमत पर मारवाड़ी समाज के गौरव की रक्षा करने को कृत संकल्प हैं। जब यह बात हमारे मन में बैठ जाएगी तो हमारा गौरव बोध जागृत होगा और हम अपने समाज के हित की बात सोचने लगेंगे।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान एवं श्री दिलीप गांधी एक आकर्षक मुद्रा में

अपने प्रथम अध्यक्षीय कार्यकाल में मैंने देखा कि किस तरह लोगों में समाज को महिमा मंडित करने का जज्बा है। वह तड़प है जो समाज की छवि को सुन्दर से सुंदरतम बनाने को आतुर है। जरूरत लोगों के इस हुजूम को नेतृत्व देने की है तथा उस नेतृत्व के प्रति लोगों के मन में आस्था जगाने की है।

मैंने पाया है कि सम्मेलन के प्रति लोगों की आस्था पुनः बढ़ने लगी है। सम्मेलन के कार्यों में लोगों की भागीदारी का बढ़ते जाना एवं चिट्ठियों के माध्यम से अपनी बात बेबाकी से प्रकट करना यह साबित करता है कि अगर हम लोगों को सही मार्ग दिखाने में सफल रहे तो आने वाले दिनों में समाज को परिवर्तित करने के लिए हमें अधिक चिंता नहीं करनी पड़ेगी। हमारे समाज के सचेतन लोग स्वयं ही यह कार्य करेंगे।

सम्मेलन का १९वां राष्ट्रीय महाधिवेशन मां मुम्बा देवी की पावन नगरी मुंबई में आयोजित हो रहा है। मुंबई यानी देश की आर्थिक राजधानी। मुंबई में अधिवेशन आयोजित करने के संकेत को समझना है। मारवाड़ी समाज की ख्याति व्यापारिक क्षेत्र में दक्षता के कारण रही है। सदियों से अपनी मातृ भूमि राजस्थान, हरियाणा व मालवा से रोजीरोटी की जुगाड़ में दिशावर को निकले मारवाड़ियों को व्यापार, वाणिज्य ही सबसे आसान तरीका लगा था प्रतिष्ठित जीवन जीने का। एक तो इसमें गुलामी करने की जरूरत नहीं थी, दूसरे अपनी क्षमता, दक्षता के अनुसार अपने व्यापार को बढ़ाने का अवसर मिलता था। रेगिस्तानी जिंदगी से जूझते हुए हमारे समाज के लोगों ने संचय के महत्व को समझा था। व्यापार से अर्जित धन के संचय ने उन्हें जहां एक ओर प्रतिष्ठित जीवन का संसाधन दिया वहीं दूसरी ओर समाज के गरीब, उपेक्षित लोगों की सेवा का अवसर भी दिया। अपनी गाढ़ी कमाई का एक हिस्सा समाज के हित में खर्च करना एक परंपरा रही है। इसमें पिछले कुछ वर्षों से शिथिलता आयी है लेकिन यह परंपरा एकदम से खत्म नहीं हुई है।

देश की आर्थिक राजधानी में अधिवेशन आयोजित करने का हमारा मकसद यह संकल्प लेने का है कि हम हर कीमत पर मारवाड़ी समाज को देश की अर्थ व्यवस्था का महत्वपूर्ण स्तम्भ बनाए रखेंगे। अर्थ के अपव्यय की जो मानसिकता हमारे समाज के कुछ लोगों में घर कर गई है, उन्हें हम यह समझायेंगे कि अपने लिए न सही समाज के लिए आप धन का अपव्यय रोकें। धन के अपव्यय से किसी व्यक्ति या परिवार की शोभा भले बढ़ती हो पर समाज की छवि उससे धूमिल होती है। अन्य समाजों के समक्ष एक गलत संदेश जाता है। कभी-कभार यही संदेश आफत का कारण बन जाता है। हमें इससे बचना ही होगा। आधुनिक होना अच्छी बात है लेकिन आधुनिकता की आंधी में अपनी परंपरा, अपने संस्कार और अपने गौरव की ही तिलांजलि दे देना कतई अच्छी बात नहीं हो सकती।

हमारे लिए यह गर्व का विषय है कि हमारा समाज आज भी अन्य हिंदी भाषी समाजों से आगे है। देश ही नहीं पूरी दुनिया में हमारे समाज के लोग फैले हुए हैं एवं प्रतिष्ठित हैं। दुनिया के विकसित देशों में जाकर हमारे समाज के युवाओं ने आश्चर्यजनक प्रगति की है। अगर हम ऐसे प्रतिभावान युवाओं को अपने साथ रख सकें तो इसमें हमारा ही हित

होगा। चाणक्य ने कहा था वृद्ध एवं परिपक्व मस्तिष्क दिशा निर्देश देते रहें तथा क्षमता युवाओं के हाथ में केन्द्रित हो तो कोई भी व्यवस्था उन्नति की ओर जाती है। हमें समाज के युवाओं को आगे लाना होगा। उनके मन में समाज के प्रति सम्मान की भावना बैठानी होगी। उन्हें उनकी जिम्मेवारियों का भान कराना होगा। हमें यह बात याद रखनी होगी राजनीतिक लड़ाई लड़ने की अपेक्षा सामाजिक लड़ाई लड़ना अधिक दुष्कर होता है। सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय लोगों को तलवार की धार पर चलना होता है। जरा सी असावधानी से कलंक का टीका माथे पर लग जाता है जिसे जीवन भर धोया नहीं जा सकता।

ऐसा होते हुए भी इस अधिवेशन के लिए लोगों में जो उत्साह है, मुंबई के हमारे साथियों में जो जोश है वह नमन करने योग्य है। यही उत्साह और जोश हमारे समाज के गौरव को पुनर्स्थापित करेगा।

हमारे मध्य इतने सबल, शक्तिशाली एवं समर्पित कार्यकर्ता हैं एम.पी., एम.एल.ए., कॉन्सुल के रूप में तो हम क्यों नहीं अपना झण्डा विश्व में फहरा सकते हैं।

महिलाएं आगे बढ़ेंगी हमारा समाज आगे बढ़ेगा ऐसे मेरा विश्वास है। महिलाओं की निरन्तर प्रगतिमूलक कदम ने विश्व को चमत्कृत कर दिया है। धरती की बात छोड़िए, महिलाओं ने तो अन्तरिक्ष की साहसिक यात्रा पर भी आगे कदम बढ़ा दिए हैं और अपने कदमों के छाप छोड़े हैं।

दूसरी ओर युवा वर्ग ही समाज के प्रहरी हैं। उनके सबल कन्धों पर ही समाज टिका है। यदि उनके ही कदम डगमग गए तो समाज डगमगा जाएगा। उन्हें आदर्श मूर्ति राम की भूमिका का पालन करना है और समाज में रावण की बाँ काटनी हैं।

भव्य राष्ट्रीय अधिवेशन के लिए महाराष्ट्र प्रा. मा. सम्मेलन के कार्यकर्ताओं एवं पदाधिकारियों के प्रति आभार।

इस अवसर पर सम्मेलन के निवर्तमान अध्यक्ष व सम्मेलन के मुख पत्र **समाज विकास** के सम्पादक **श्री नन्दकिशोर जालान** द्वार सम्पादित **समाज विकास विशेषांक** का विमोचन भारत सरका के माननीय जहाजरानी राज्यमंत्री व सम्मेलन के राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य श्री दिलीप गांधी के कर-कमलों से किया गया।

कार्यक्रम का संचालन श्री ललित गांधी ने किया।

आज के समारोह में मारवाड़ी युवा मंच की बुहारनपुर शाखा (मध्य प्रदेश) को एवं मारवाड़ी युवा मंच मिड टाउन महिला शाखा, धुलियान को अलग-अलग सर्वश्रेष्ठ शाखा पुरस्कार प्रदान किया गया। पुरस्कार स्वरूप इन्हें स्मृतिफलक प्रदान किए गए।

इस अवसर पर उपस्थित थे- धुलियान शाखा की संस्थापिका सौ. सुमन पसारी, नारी चेतना समिति की संयोजिका सौ. अरुणा भराडिया। युवा मंच के शाखा पदाधिकारियों में उपस्थित थे सर्वश्री नरेन्द्र कुमार धीरज, सचिव डा. मनोज अग्रवाल, सह सचिव मितेश झुनझुनवाला, कार्यकारिणी सदस्य परमेश्वर शर्मा, संदीप पारीक, संजय पाटनी आदि।

समाज विकास विशेषांक का उद्घाटन करते हुए केन्द्रीय जहाजरानी राज्यमंत्री श्री दिलीप गांधी। मंच पर उपस्थित हैं सर्वश्री राज के पुरोहित, सीताराम शर्मा, रमेश बंग, मोहनलाल तुलस्यान एवं डा. जय प्रकाश मुंदड़ा

विषय निर्वाचनी समिति की बैठक

९-१० जनवरी

अधिवेशन समारोह की प्रथम सुबह ९ जनवरी को भाटिया महाजन बाड़ी में ११ बजे सम्मेलन सभापति श्री मोहनलाल तुलस्यान की अध्यक्षता में विषय निर्वाचनी समिति की बैठक हुई।

बैठक का प्रारम्भ महामंत्री श्री सीताराम शर्मा ने उपस्थित सदस्यों का स्वागत एवं एक दूसरे के आपसी परिचय से किया। तदुपरांत ६ दिसम्बर २००३ को गुवाहाटी में सम्पन्न हुए अखिल भारतीय समिति की बैठक में श्री मोहनलाल तुलस्यान के पुन: अध्यक्ष पद पर निर्वाचित होने की जानकारी से सदस्यों को अवगत कराया। इस जानकारी का सदस्यों ने तुमुल हर्षध्वनि व तालियों की गड़गड़ाहट से स्वागत किया।

सभा को सम्बोधित करते हुए सुप्रसिद्ध पत्रकार श्री गीतेश शर्मा। मंचस्थ हैं सर्वश्री भानीराम सुरेका, रतनलाल शाह, रमेश चंद बंग, मोहनलाल तुलस्यान, सीताराम शर्मा, दिलीप गांधी

सदस्यों ने कोलकाता में नये सम्मेलन भवन खरीद लिए जाने की जानकारी का भी हर्षध्वनि से स्वागत किया। श्री शर्मा ने स्पष्ट किया कि संविधान की धाराओं में संशोधन हेतु जो प्रस्ताव आते हैं उन्हें सर्वप्रथम सर्वोच्च नीति निर्द्धारक समिति अर्थात् अखिल भारतीय समिति की सभा में प्रस्तुत किया जाता है। उस सभा में पारित किए गए प्रस्तावों को अधिवेशन में प्रेषित करने के पूर्व विषय निर्वाचनी समिति में पारित करना आवश्यक होता है तत्पश्चात् ही वे पारित प्रस्ताव अधिवेशन में मनोनीत हेतु प्रेषित किए जा सकते हैं। अत: आज की यह सभा अखिल भारतीय समिति द्वारा पारित प्रस्तावों को मंजूरी देने हेतु आयोजित की गई है।

श्री शर्मा ने संविधान में संशोधन हेतु आए हुए विभिन्न प्रस्तावों को सभा के समक्ष रखा जिन्हें काफी विचार-विमर्श के उपरांत पारित किया गया।

पारित संशोधनों में मुख्य थे-

साधारण और विशिष्ट सदस्य को समाहित कर एक किया जाना और उसे साधारण विशिष्ट सदस्य की संज्ञा दिया जाना, उप हटाकर संयुक्त महामंत्री किया जाना। अन्य आये हुए प्रस्तावों में उपसभापति ४ की जगह ६ हो को बहुमत से पारित किया गया।

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री लोकनाथ डोकानिया ने सभा में कहा कि पदाधिकारी बनने के लिए एवं अपने नाम के साथ पद जोड़ने के लिए सम्मेलन से जुड़ रहे हैं, यह प्रावधान समाप्त हो। सिर्फ काम के आधार पर पद आवंटित हो। २० लोगों की एक कमेटी बनाकर विसंगतियों को दूर किया जाए इसके लिए संविधान में संशोधन किया जाए। एक उपसमिति गठित कर इस पर विचार किया जाए।

तदुपरांत महामंत्री श्री सीताराम शर्मा ने अधिवेशन में रखे जाने वाले विभिन्न प्रस्तावों को पढ़कर सुनाया जो निम्न थे- राष्ट्रीय एकता, संगठन, नई अर्थ-व्यवस्था, नारी एवं युवा शक्ति, नई प्रतिभा, राजनैतिक एवं सामाजिक जीवन, राजस्थानी भाषा तथा सामाजिक सुधार।

आज की सभा में आगत सभी पदाधिकारी व सदस्यवृन्दों ने अपनी उपस्थिति दर्ज करायी एवं खुलकर हिस्सा लिया।

सभापति श्रीमोहनलाल तुलस्यान द्वारा स्वागत व अभिनन्दन के स्वर में उपस्थित सभी सदस्यों को धन्यवाद देने के उपरांत सभा समाप्त की गई।

विषय निर्वाचनी समिति की दूसरे सत्र की बैठक १० जनवरी को प्रात: १०.३० बजे भाटिया महाजन बाड़ी में आयोजित की गयी। सभा की अध्यक्षता सम्मेलन के पुनर्निर्वाचित सभापति श्री मोहनलाल तुलस्यान ने की। सभा में कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। महामंत्री श्री सीताराम शर्मा ने विगत सम्मेलन के विगत कार्यकाल का प्रतिवेदन सर्वप्रथम कार्यकाल के प्रतिवेदन के रूप में १८वें अधिवेशन से १९वें अधिवेशन के दौरान आयोजित प्रांतीय अधिवेशनों, गतिविधियों का विस्तृत ब्यौरा प्रस्तुत किया जिसे सर्वसम्मति से स्वीकृत किया गया। उन्होंने बताया कि विगत कार्यकाल में सम्मेलन का एक सार्वकालिक सपना सच हुआ। इसका अपना एक भवन खरीदा गया।

भवन का नाम मारवाड़ी सम्मेलन भवन दिया गया है। यह २५ राजा राम मोहन सरणी, अमहर्स्ट स्ट्रीट में स्थित है। इस दोमंजिला दो भवन के पुनरुद्धार कराने का विचार है। आधुनिक ढंग से इसके पुनर्निर्माण की योजना है जिसमें आर्ट गैलरी, आडिटोरियम, ९-१० आवास कक्ष आदि भी होंगे।

सभा में उपस्थित सभी प्रांतीय अध्यक्षों, मंत्रियों एवं निवर्तमान अध्यक्ष-उपाध्यक्षों का परिचय कराया गया।

अपने प्रतिवेदन पाठ के अंत में श्री शर्मा ने इसे अपना अंतिम कार्यकाल बताया और सबके प्रति आभार प्रकट किया।

आय-व्यय एवं संतुलन पत्र

कोषाध्यक्ष श्री राम औतार पोद्दार द्वारा सन् २००१-०३ का आय-व्यय एवं संतुलन पत्र को सभा के समक्ष प्रस्तुत किया गया जिसे कि निर्विरोध स्वीकृत किया गया।

संविधान की धाराओं में संशोधन प्रस्ताव

श्री शर्मा ने स्पष्ट किया कि संविधान की धाराओं में संशोधन का कार्य दो वर्ष पहले आरम्भ हुआ था जब उनकी अध्यक्षता में एक संविधान संशोधन उपसमिति का गठन किया था। तत्पश्चात विषय निर्वाचनी समिति द्वारा संविधान की धाराओं में संशोधन संबंधी प्रस्तावों को महामंत्री श्री शर्मा ने विचारार्थ प्रस्तुत किया।

पदाधिकारियों का चुनाव

सभापति के अलावा अन्य पदाधिकारियों के चुनाव विषय पर केन्द्रीय मंत्री एवं मारवाड़ी सम्मेलन के संरक्षक श्री दिलीप गांधी ने निम्नलिखित प्रस्ताव प्रस्तुत किये-

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का यह १९वां महाधिवेशन सम्मेलन के आगामी सत्र के पदाधिकारियों के मनोनयन का पूर्ण अधिकार सम्मेलन के सभापति श्री मोहनलाल तुलस्यान को प्रदान करता है।

इस प्रस्ताव का स्वागत व समर्थन करते हुए राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डा. जय प्रकाश मूंदड़ा ने कहा कि हमें समाज का संगठन करना है विघटन नहीं। अत: परस्पर वैचारिक एकता का परिचय देते हुए संवैधानिक धारा से ऊपर उठकर सोचा जाना चाहिए। इस प्रस्ताव के समर्थन में प्रांतीय अध्यक्ष श्री रमेश बंग ने कहा कि श्री तुलस्यान जी को टीम का नेतृत्व करना है अत: उन्हें संगठन का कार्य सही ढंग से चलाने के लिए अन्य पदाधिकारियों को चुनने का अधिकार दिए जाने से एक सुविधाजनक माहौल उत्पन्न होगा। समाज के राजनीति करने के लिए समर्पण और समर्थन की भावना होनी चाहिए। यह विचारधारा, भावना हम सभी को अपनानी चाहिए।

इसके पूर्व प्रांतीय अध्यक्षों को अपने विचार व सुझाव प्रकट करने हेतु आमंत्रित किया गया। जिनमें मुख्य रूप से शामिल के आंध्र प्रदेश के श्री राम किशन गुप्ता, बिहार के डा. रमेश कुमार केजड़ीवाल, उत्कल के श्री विश्वनाथ मारोठिया, प.बंग के श्री लोकनाथ डोकानिया, पूर्वोत्तर के मंत्री श्री ओम प्रकाश खंडेलवाल।

डा. रमेश केजड़ीवाल ने संगठन, सेवा, समाज-सुधार, कल्याण का नारा देते हुए भाग्यशाली दानपत्र योजना, सामूहिक विवाह, वैवाहिक परिचय सम्मेलन योजना, आवास योजना, गरीब लोगों से सम्मेलन को जोड़ने की विभिन्न योजनाओं से अवगत कराया। डा. केजड़ीवाल ने बताया कि समाज कल्याण के तहत नियमों में सुधार करना चाहते हैं। शादी-विवाह के अवसर पर ४ रु. की मिलनी हो एवं पानी लेकर २१ प्रकार के खाद्य पदार्थ से अधिक परिवेशित नहीं हो। युवा एवं महिला को जोड़ने, सामंजस्य तैयार करने की योजना से भी अवगत किया।

उन्होंने बताया कि आवास योजना के तहत ४, १०, १२ करके प्लांट लेकर २-२ रूम के फ्लैट निर्माण की योजना है। जो जमीन देगा उसके नाम से कालोनी का नाम रखेंगे। श्री नागरमल बाजोरिया द्वारा पटना में आवास देने की घोषणा का करतल ध्वनि से स्वागत किया गया।

श्री विश्वनाथ मारोठिया ने स्वास्थ्य, सेवा, शिक्षा, सहयोग को अपना नारा बताते हुए बालांगीर जिला को काफी सशक्त शाखा घोषित किया जिनके अध्यक्ष श्री गौरी शंकर अग्रवाल एवं उपाध्यक्ष श्री किशनलाल अग्रवाल है। बलांगीर जिला ने शिक्षा कोष के तहत १० लाख रुपये का योगदान दिया है। मेडीक्लेम की व्यवस्था की जा रही है। उच्च शिक्षा की ओर बढ़ रहे छात्र-छात्राओं को मासिक आर्थिक सहयोग तथा गरीब कन्या के विवाह में आर्थिक सहयोग देने का संकल्प है। संगठन को मजबूती प्रदान करने तथा आंचलिक अधिवेशन करने का प्रयास है। बलांगीर जिला में २४ गांवों ने मिलकर अग्रवाल पंचायत बनायी है जिनमें समाज बंधुओं की समस्याओं का समाधान किया जाएगा।

हमारा सुझाव है कि अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के लेटर हेड पर गणेशजी की छवि दी जाए और उसके नीछे लिखा जाए- 'गर्व से कहो हम मारवाड़ी है।' हमारा यह भी सुझाव है कि अग्रवाल, माहेश्वरी से निकलकर इतर समाज से भी अपना वैवाहिक संबंध हो। फैमिली प्लानिंग भ्रूण हत्या बंद के प्रति कार्यक्रम लिया जाए तभी कन्याओं की कमी पूरी होगी।

प्रांतीय रपटों के क्रम को आगे बढ़ाते हुए पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री ओम प्रकाश खण्डेलवाल ने कहा- असम, अरुणाचल, मणिपुर, सिक्किम आदि आठ प्रांतों को जोड़कर पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन बना है। यहां से प्रकाशित हिन्दी मासिक पत्रिका सुचारू रूप से प्रकाशित हो रही है। गर्व से हम क्यों कहें कि हम मारवाड़ी है गर्व से अन्य लोग कहें कि 'वह मारवाड़ी है'। अपने आत्म सम्मान आत्म गौरव को हम न खोयें इस दृष्टिकोण से कार्य करें। महिला कोष, शिक्षा कोष एवं जनकल्याण कोष की स्थापना हुई है। राजनीतिक चेतना हमारे लिए बड़ी चुनौती है। बंगलादेश से आए लोगों का नाम वोटर लिस्ट में जुड़ जाता है

और हमारे नाम कट जाते हैं। कुल मिलाकर पूर्वोत्तर प्रदेश में सम्मेलन की भूमिका बहुत प्रभावशाली है।

महाराष्ट्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के श्री वीरेन्द्र प्रकाश धोका ने कहा- प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के कार्यालय मंत्री के रूप में कार्य करता हूं। विगत तीन वर्षों के अन्दर २ प्रांतीय अधिवेशन, ६ प्रांतीय कार्यकारिणी की बैठक हुई है। भ्रूण हत्या के कारण आज कन्याओं की कमी स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रही है। सम्मेलन द्वारा निर्धन परिवार की १३ कन्याओं का विवाह भी कराया गया है। दंगे के दौरान १००० पुलिस कान्स्टेबल को भोजन कराने की व्यवस्था की गयी। काम करते हैं पर पेपर वर्क नहीं हो पाने के कारण यह गौण रह जाता है।

झारखंड के श्री विनोद अग्रवाल ने कहा-बहुत जद्दोजहद के बाद १५.११.२००२ को बिरसा मुण्डा की जन्म जयंती के दिन संगठन की स्थापना हुई। १५.११.२००२ को प्रांतीय अधिवेशन हुआ। मुख्यमंत्री, केन्द्रीय मंत्री पधारे।

१ जून २००३ को प्रांतीय समिति की बैठक हुई। झारखण्ड में चुनाव के माध्यम से बहुत बड़ा कार्यक्रम ले रहे हैं। १० विधायक और १ एम.पी. चुनकर आएं इस पर कार्य कर रहे हैं।

सुप्रसिद्ध पत्रकार श्री गीतेश शर्मा ने राष्ट्रीय एकता पर बहुत ही प्रभावशाली ढंग से अपनी विचारधारा प्रस्तुत करते हुए उन्होंने जातिगत संकीर्णता, भाषाई संकीर्णता, क्षेत्रीयता के मामले से ऊपर उठकर मारवाड़ी समाज को काम किए जाने की प्रशंसा की। उन्होंने पूर्व सभापतियों का स्वाधीनता संग्राम एवं समाज सुधार की दिशा में दिए गए अवदानों से अवगत कराया।

केन्द्रीय राज्यमंत्री श्री दिलीप गांधी ने कहा- 'हम इन आठ प्रस्तावों के माध्यम से कहना चाहते हैं कि राजनीति में हमारे योगदान क्या हैं। हमें अभी काफी सक्रिय होने की आवश्यकता है। परिवार में एक आदमी राजनीति में अवश्य होना चाहिए। हम जड़ से जुड़ने की चेष्टा करें। चाहें हम कोई भी पार्टी के लिए क्यों न काम करते हों? परंतु उसकी विचारधारा सामाजिक हो। सामाजिक विचारधारा संगठन का समर्थन प्राप्त कर समाज के लिए बहुत कुछ करने का मार्ग प्राप्त कर सकता है।

राजनीतिक सोच यह हो कि हम कौन सी पार्टी के मार्फत आगे बढ़कर समाज हित का कार्य कर सकते हैं। हम छोटे-छोटे बच्चों को सांगठनिक रूप से शिविर के माध्यम से प्रशिक्षित कर सकते हैं। आने वाले २० वर्षों के बाद हमारे सामने एक परिपक्व व्यक्ति तैयार होगा जो समाज की बागडोर को बखूबी थामकर देश एवं राष्ट्र के लिए भी कार्य कर सकता है। वही परिवर्तन का सूत्रधार सिद्ध हो सकता है और एक जीता-जागता सशक्त समाज हमारे सामने रख सकता है।

आज मारवाड़ी समाज राष्ट्र को आयकर के रूप में सबसे अधिक धन प्रदान करता है। यह उसकी बुद्धिमता के कारण ही होता है। परंतु मारवाड़ी को प्रति लोगों का नजरिया साफ-सुथरा नहीं होता है। इस दृष्टिकोण को बदला जा सकता है तो मात्र संगठन के माध्यम से ही। हर क्षेत्र में यदि हमारे लोग रहे तो हर क्षेत्र में हमें संरक्षण प्राप्त होगा। चोरी हमारे घर में होती है हम शिकायत दर्ज कराने जाते हैं तो उल्टा हमें ही चोर का दर्जा दिया जाता है। इसी समय राजनीति काम में आती है। यदि हम फोन कर कह देते हैं कि इस तरह की घटना घटी है उसका कम्प्लेन लिखा जाए तो तुरंत एक्शन होता है, उस पर तामिल की जाती है और उसके साथ सद्व्यवहार होता है। यही राजनीति का प्रभाव है। इसीलिए हमें राजनीति में जाना आवश्यक है। परंतु राजनीति में वैसे ही लोगो को जाने चाहिए जिनके विचार और मानसिकता साफ-सुथरे हों।

हर चीज पैसों से नहीं तौली जाती। पैसा कोई फैक्टर नहीं है। विश्वास के शब्दों की आवश्यकता है। इससे राजनीति में जाने वाला यह सोचता है कि समाज उसके साथ है। लाख दो लाख रुपये का कार्य विश्वास का एक शब्द कर सकता है।

हर अधिवेशन ने हमारे समाज को एक नई दिशा दी है। हर अधिवेशन ने एक नया नारा एक नया रास्ता दिया है। अब तक १८ दिशाएं हमने दी हैं। अब १९वां रास्ता भी हमें समाज को देना है। आज का नारा है 'मारवाड़ी समाज राजनीति में अग्रसर हो।'

गुटबाजी से संगठन कमजोर होता है। हमारी परम्परा रही है कि हम कोई भी प्रक्रिया या प्रस्ताव सर्वसम्मति से मनोनीत करते हैं तो इससे शाख भी अच्छी होती है काम भी अच्छा होता है। निर्विरोधिता से एक शाख बनती है।

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं विधायक डॉ. जयप्रकाश मुंदड़ा ने कहा- राजनीति किसी भी समाज का एक अंग हो गया है और राजनीति घर-घर में व्याप्त है। व्यक्ति की आम सुलभ व्यवस्थाओं में सुविधाओं की प्राप्ति के लिए भी उसे राजनीतिज्ञ का सहारा लेना पड़ता है। अत: समाज को राजनीति में उतरना बहुत ही आवश्यक हो गया है। राजनीतिज्ञ की भी अपेक्षा है समाज से। जब-जब चुनाव हो तो समाज अपने प्रतिनिधि के प्रति विश्वास प्रकट कर उसे राजनीति में आगे बढ़ाये। तभी दोनों समाज और राजनीतिज्ञ का पारस्परिक संबंध सामाजिक व्यवस्था को उन्नत कर सकता है। राजनीति में जाने वाले को भी समाज से अपेक्षा रहती है समाज कहे कि तुम आगे बढ़ो मैं तुम्हारे साथ हूं।

जब हम राजनीति में नहीं रहेंगे तो मदद कैसे करेंगे। हम आपकी ५ साल मदद करते रहते हैं, परंतु ५ साल में एक बार जब हम मदद मांगते हैं तो बहाने बाजी शुरू कर देते हैं, मुंह फेरते हैं, मिलने से कतराते हैं।

राजनीति में आने वाले लोगों का समाज मदद करें तो बहुत लाभान्वित हो सकता है समाज। कोई भी प्रांत या समाज राजनीति से जुड़े बिना कार्य कर ही नहीं सकता है। राजनीति के साथ-साथ सामाजिक कार्य करें यही राजनीति का पहला द्वार है। ८० प्रतिशत समाजकरण करें तो २० प्रतिशत राजकरण साथ लेकर आता है। सेवा करने से ही मेवा मिलता है। समाज से अपील है कि राजनीति में आने वाले समाज बंधु का साथ दें।

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रतन शाह ने कहा कि संविधान में कुछ खामियां है जिसका संशोधन परमावश्यक है। महाराष्ट्र के तीन व्यक्तित्व मुंदड़ा, गांधी, बंग ने मारवाड़ी समाज के सिर को ऊंचा किया है अत: मैं बधाई देता हूं।'

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री नन्दलाल रूंगटा ने कहा- 'भारत की अर्थ व्यवस्था में हमारे समाज का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मारवाड़ी समाज देश के कोने-कोने में पहुंचकर व्यवसाय क्षेत्र को उन्नत किया और देश की आर्थिक व्यवस्था के मुख्य आधार बने। हमें अपने बच्चों को आज की तकनीकी शिक्षा पर अधिक जागृत करना होगा।

उत्कल के श्री जगदीश प्रसाद अग्रवाल ने कहा- 'समाज को ऐसी दिशा दें ताकि खोयी हुई प्रतिष्ठा वापस प्राप्त की जा सके। अन्तर्राष्ट्रीय तकनीकी को देखते हुए बच्चों को उच्च शिक्षित करना हमारा प्रथम कर्त्तव्य बने। परिवार के बिखराव को रोकना होगा एवं समाज को नई अर्थ व्यवस्था के अनुकूल ढालना होगा।

पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री मौजीराम जैन ने कहा- समाज में संगठन अति आवश्यक है। संगठन के बिना हम परिणाम से वंचित रह जाते हैं। हम पैसा लगाते हैं, श्रम करते हैं परंतु संगठन के अभाव में किला कोई और जीतता है।

मुजफ्फरपुर के प्रांतीय संयुक्त महामंत्री श्री किशोरीलाल अग्रवाल ने कहा- बिना महिलाओं के सहयोग के कभी कोई किसी भी क्षेत्र में आगे बढ़ नहीं सकता। उसी प्रकार युवा शक्ति के अभाव में समाज और संगठन को आगे ले जाना प्राय: नामुमकिन हो जाता है। समाज में दहेज प्रथा का जादू सिर चढ़कर बोल रहा है। अधिकतर यह देखने को मिलता है कि महिलाएं ही दहेज प्रथा की जनक सिद्ध होती है। महिलाएं अगर दहेज विमुखी हो जाएं तो समाज की यह घृणित प्रथा स्वत: ही लोप हो जायेगी। मारवाड़ी भाषा को संविधान की ८वीं सूची में शामिल किया जाए इस पर सामूहिक प्रयास अति आवश्यक है। हम सभी को अपनी भाषा यानी मारवाड़ी भाषा में ही बात करनी चाहिए। संगठन को बलिष्ठ रखने के लिए प्रांतीय एवं शाखा सदस्य को बढ़ावा देना होगा।

झारखंड के श्री दीनदयाल डालमिया ने कहा- हरेक प्रांत में कितनी इकाई है यह तय किये जाए। कहां संगठन होता है कहां नहीं होता है उसका परिमापन करें। चुनाव एक साथ हो चाहे केन्द्रीय हो या प्रांतीय हो या शाखागत हो।

महाराष्ट्र के मलकापुर शाखा के उपाध्यक्ष श्री दामोदर सरवानी ने कहा- 'हर जगह मारवाड़ी समाज द्वारा स्थापित गौशालाएं हैं। गाय की महत्ता आने वाले समय में प्रस्फुटित होगी। सभी जगह गौशालाएं स्थापित करने के लिए एवं उसकी संरक्षण के लिए प्रस्ताव पारित करें।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान ने कहा- 'जो कार्य मैं करुंगा वह आपके सहयोग के बिना संभव नहीं है। आपका सहयोग पाकर ही मैं सहस्त्रबाहु बनकर कार्य कर पाऊंगा। अधिक से अधिक संख्या में सदस्य बनाएं। आने वाले समय में ५००-१००० आजीवन सदस्य बनाए जाएं तभी हमारा आंदोलन हमारा सम्मेलन आगे बढ़ेगा, हमारी गतिविधियां आगे बढ़ेगी। आयोजकों को धन्यवाद। श्री हरिप्रसादजी कानोड़िया को भी धन्यवाद। हमारे कहने पर दिल्ली से २-३ घंटे के लिए आए। यह उनका सम्मेलन के प्रति प्रेम है। इस अधिवेशन में अंश ग्रहण करने आए विभिन्न प्रांत एवं शाखाओं के हमारे सदस्यगणों के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूं जो अपना धन एवं समय की कीमत पर यहां आए और अधिवेशन को गरिमा प्रदान किए। हम सबको जोड़कर चलें, आडम्बरी जीवन को छोड़कर चलें। मोटा पहने, मोटा खाएं और जो कमाएं समाज के काम में लाएं। विवाह आदि में सादगी बरतें। समाज से यही मेरी अपील है। आज की बैठक में अभूतपूर्व प्रस्ताव आए हैं इसका मनन हो, चिन्तन हो एवं इन्हें अपनाया जाए। अपनी कार्यशैली ठीक करें, समाज को आगे बढ़ाये, कुरीतियों को तोड़कर समाज का उत्थान करें, संगठन को बल प्रदान करें। हम दस करोड़ हैं पर हम सब एक हैं।

राष्ट्रीय महामंत्री के रूप में श्री सीताराम शर्मा ने हमें लगातार दो सफल सत्र दिए हैं और संवैधानिक तौर पर अब वे उस पद पर नहीं रह सकते। परंतु हम उन्हें नहीं छोड़ सकते, उन्हें काम करना है। उनका विदाई समारोह हो एवं धन्यवाद प्रस्ताव पारित हो।

आज के कार्यक्रम में अपने-अपने विचार व्यक्त करने वाले अन्यान्य सदस्यवृंदों में थे राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री सर्वश्री विश्वनाथ प्रसाद कहनानी, रामप्रसाद अग्रवाल (बिहार), गोपाल जाखोटिया, ओमप्रकाश पोद्दार (कलकत्ता, शाखाध्यक्ष), सांवरमल अग्रवाल (राष्ट्रीय कार्यकारिणी), विश्वनाथ केडिया (बिहार, सहरसा के पूर्व उपाध्यक्ष), सीताराम बाजोरिया (प्रमंडलीय उपाध्यक्ष, मुजफ्फरपुर), विश्वाथ प्रसाद अग्रवाल (मुंबई, समता पार्टी अध्यक्ष), जयदेव प्रसाद दम्मानी, नागरमल बाजोरिया, श्यामसुन्दर तुलस्यान (चनपटिया), विश्वनाथ मोरोठिया, रवीन्द्र कुमार लड़िया आदि।

आज प्रात: युवा सत्र एवं महिला सत्र का उद्घाटन श्री राघव जी अर्थ मंत्री, मध्य प्रदेश सरकार एवं श्री अरूण बजाज (पूर्व अध्यक्ष) द्वारा किया गया। इन सत्रों में मुख्यत: कार्यकर्ता को आगे बढ़ाने एवं संगठन के विकास पर चर्चा की गयी। मुख्य अतिथि थे युवा मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री बलराम सुल्तानिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता उपाध्यक्ष श्री गोपाल अग्रवाल एवं महिला सम्मेलन की राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती सावित्री बाफना ने किया।

युवा मंच कार्यक्रम में उपस्थित रहे शाखाध्यक्ष सर्वश्री सुदेश अट्टल, महामंत्री भरत गुर्जर, मंत्री सुनील दायमा, सुनील अग्रवाल, उपाध्यक्ष दिलीप बजाज, उपाध्यक्ष- कल्पना मारु, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष गोपाल अग्रवाल आदि।

१९वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन

पारित प्रस्तावें

मुंबई अधिवेशन (९,१०,११ जनवरी) के दौरान राष्ट्रीय एकता, संगठन, नयी अर्थव्यवस्था, नारी एवं युवा शक्ति, नयी प्रतिभा, राजनैतिक एवं सामाजिक जीवन, राजस्थानी भाषा तथा समाज सुधार इन आठ विषयों पर महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित हुए। इन पारित प्रस्तावों के आधार पर राष्ट्रीय एवं प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन आगामी वर्षों के कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार करेंगे।

प्रथम प्रस्ताव
राष्ट्रीय एकता

सम्मेलन का यह अधिवेशन भारत की राष्ट्रीय एकता और अखंडता को सर्वोपरि मानता है। राष्ट्र की सार्वभौम एकता एवं अखण्डता को चुनौती देने वाली सभी प्रकार की आतंकवादी, विघटनकारी एवं हिंसक प्रवृत्तियों के विरुद्ध अहिंसक तरीकों से एवं संगठित रूप से प्रखर प्रतिकार करने के लिए समाज का आह्वान करता है। प्रांतीयता, क्षेत्रियता, भाषा, संस्कृति एवं सम्प्रदाय आदि के आधार पर अलगाववाद को बढ़ावा देने वाली प्रवृत्तियों को हम देश की एकता के लिए खतरनाक मानते हैं। हर प्रकार की राष्ट्र विरोधी घातक प्रवृत्तियों के विरुद्ध प्रतिकारात्मक कदम उठाने एवं एकतावादी शक्तियों के एकीकरण के लिए समाज को प्रभावी भूमिका निभाने के लिए हम समाज के सभी वर्गों के समुचित योगदान की अपील करते हैं।

प्रस्तावक- श्री गीतेश शर्मा (कोलकाता)
समर्थक- श्री रमेश बंग (अध्यक्ष, महाराष्ट्र)

द्वितीय प्रस्ताव
संगठन

मारवाड़ी समाज देश एवं विदेश के कोने-कोने में फैला हुआ है और उन क्षेत्रों के निवासियों के साथ समरस होकर वाणिज्य व्यवसाय के कार्य में संलग्न है। अपने-अपने क्षेत्र के निवासियों की सेवा करना, उनके सुख-दु:ख में शामिल होकर उस क्षेत्र के विकास में योगदान करना और वहां की समस्याओं के प्रति जागरूक रहकर उनका निराकरण करने में हाथ बंटाना इस समाज की गौरवशाली परम्परा रही है। इस समाज के इस प्रकार के कार्यों का आंकलन कर उसका लेखा-जोखा प्रस्तुत करने, देश के कोने-कोने में बिखरे समाज के लोगों की समस्याओं को सुलझाने, उनमें आत्म-विश्वास और सामाजिक एकता की भावना को दृढ़ करने के लिए यह आवश्यक है कि यह सम्मेलन संगठनात्मक पक्ष को सुदृढ़ करें। समाज में सभी व्यक्तियों को, वे चाहे देश के किसी भी अंचल में निवास करते हों, एकसूत्र में आबद्ध करने की दिशा में कदम उठायें।

प्रस्तावक- श्री मौजीराम जैन, पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
समर्थक- श्री ओमप्रकाश खण्डेलवाल, महामंत्री
पूर्वोत्तर प्रा.मा. सम्मेलन

तृतीय प्रस्ताव
नयी अर्थव्यवस्था

मारवाड़ी समाज मुख्यतया व्यावसायिक समाज है। राष्ट्र के उद्योग एवं व्यापार के विस्तार में मारवाड़ी समाज का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। देश के कोने-कोने को 'सप्लाई लाईन' से जोड़ने में समाज के बड़े-छोटे व्यापारियों ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। स्वतंत्रता के पश्चात देश के औद्योगिकरण में भी समाज अग्रणी रहा एवं देश के १० बड़े औद्योगिक घरानों में आधे या कभी आधे से अधिक मारवाड़ी समाज के रहे हैं। पिछले कुछ वर्षों में इस स्थिति में परिवर्तन आया है। मारवाड़ी समाज की देश की अर्थव्यवस्था एवं उद्योगों में स्थान व पहुंच एवं पकड़ में लगातार गिरावट आ रही है। आज देश के १० बड़े औद्योगिक घरानों में इक्के-दुक्के रह गये हैं। बड़े घरानों में फूट एवं बिखराव , नयी सोच का अभाव, मेहनत एवं ईमानदारी में कमी तथा फिजूलखर्ची एवं रातों-रात करोड़पति बनने की प्रवृत्ति में वृद्धि आदि ने समाज के औद्योगिक समूहों की प्रतिस्पर्द्धा एवं आधुनिकतम औद्योगिक तकनीक के इस नयी खुली विश्वव्यापी अर्थव्यवस्था में पीछे ढकेल दिया है।

यह सम्मेलन इस व्यवस्था पर चिन्ता व्यक्त करता है एवं उद्योगपतियों की नयी पीढ़ी को नयी अर्थव्यवस्था के अनुकूल ढालने के लिए अपने को तैयार करने का अनुरोध करता है। व्यवसाय में मारवाड़ी समाज की साख एवं वचनबद्धता में भी कमी आयी है इस ओर भी सम्मेलन का यह अधिवेशन समाज का ध्यान आकर्षित करना चाहता है।

प्रस्तावक- श्री नन्दलाल रुंगटा, पूर्व अध्यक्ष, बिहार
समर्थक- श्री जगदीश प्रसाद अग्रवाल, पूर्व अध्यक्ष, उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन,
श्री हरिप्रसाद कानोड़िया, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य कोलकाता

चतुर्थ प्रस्ताव
नारी एवं युवा शक्ति

यह अधिवेशन इस बात पर संतोष व्यक्त करता है कि मारवाड़ी समाज में महिला अधिकारों एवं युवा शक्ति में काफी विकास हुआ है। किसी समाज के विकास में नारियों एवं युवाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। इस ऊर्जा को सम्मेलन के हित में लगाने के लिए अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन एवं अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच की स्थापना की गयी। इन संस्थाओं ने सम्मेलन

के उद्देश्यों एवं कार्यक्रमों को एक नयी गति प्रदान करने का यथा सम्भव प्रयास किया है।

समाज सुधार से संबंधित अधिकतर समस्याओं के निदान में महिला एवं युवा एक महत्वपूर्ण एवं निर्णायक भूमिका निभा सकते हैं। चाहे वह प्रश्न दहेज या दिखावे का हो या तलाक अथवा पारिवारिक टूटन का।

यह अधिवेशन महिलाओं एवं युवकों से साग्रह अनुरोध करता है कि सम्मेलन के साथ अपनी ऊर्जा एवं ज्ञान को जोड़कर समाज के विकास के कार्य में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं। सम्मेलन, महिला सम्मेलन एवं युवा मंच तीनों की मिली जुली ताकत के बिना समाज के बड़े सवालों का सामना नहीं किया जा सकता।

प्रस्तावक- श्री ओमप्रकाश अग्रवाल, कोलकाता
समर्थक- श्री किशोरीलाल अग्रवाल, संयुक्त महामंत्री, बिहार

पंचम प्रस्ताव
नई प्रतिभा

यह संतोष और प्रसन्नता का विषय है कि विगत वर्षों में समाज के अन्दर पर्याप्त उच्च शिक्षा का विकास हुआ है और साहित्य और संस्कृति की ओर लोगों की रूचि बढ़ी है। फलस्वरूप शोध, साहित्य, संस्कृति, कानून, चिकित्सा, तकनीकी और प्रशासनिक सेवाओं के क्षेत्र में समाज की नई-नई प्रतिभा ने सफल कीर्तिमान स्थापित किये। सम्मेलन न प्रतिभाओं का अभिनंदन करता हुआ समाज से निवेदन करता है कि इनको उच्चतम सम्मान दें और इन प्रतिभाओं के अधिकाधिक विकास के लिए जितना भी हो योगदान देंगे।

प्रस्तावक- श्री ओमप्रकाश पोद्दार, अध्यक्ष
कोलकाता शाखा
समर्थक- श्री सांवरमल अग्रवाल

षष्ठम् प्रस्ताव
राजनैतिक एवं सामाजिक जीवन

समाज के भाई-बहन देश के एक कोने तक फैले हुए हैं। आज के लोकतांत्रिक युग में देश को राजनीतिक एवं सार्वजनिक जीवन में भाग लेने की उत्सुकता समाज के युवक-युवतियों में जितनी पैदा हुई है उसमें और स्फुरण की आवश्यकता है। देश-सेवा की भावना को मूर्त्त रूप देने और देश की समस्या के समाधान हेतु सक्रिय भाग लेने के लिए यह सम्मेलन इसे आवश्यक समझता है कि समाज की प्रतिभाएं राजनीतिक एवं सार्वजनिक सेवा के कार्यक्रमों में बड़ी से बड़ी संख्या में भाग लें जिससे देश की प्रगति की मुख्य धारा में यह समाज भी अपना समुचित योगदान दे सके।

यह अधिवेशन समाज के बंधुओं से यह भी अनुरोध करता है कि वे जिस प्रदेश में रहते हो उसे प्रदेश का सर्वांगीण उन्नति और विकास के लिए जन-साधारण के साथ सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक, बौद्धिक व राजनीतिक जीवन के कार्यक्रमों में एक साथ घुल-मिलकर कार्य करें।

प्रस्तावक- श्री जयप्रकाश मूंदड़ा, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, महाराष्ट्र
समर्थक- श्री विनोद अग्रवाल, झारखंड

सप्तम् प्रस्ताव
राजस्थानी भाषा

राजस्थानी भाषा का प्रारंभ कम से कम ८ सौ से अधिक वर्षों पुराना है। बल्कि कुछ अंशों में देश की राष्ट्रभाषा हिन्दी के उन्नयन व विकास में उसका काफी योगदान रहा है। राजस्थानी भाषा का अपना व्याकरण है और इसका साहित्यिक भंडार भी विपुल है। सम्मेलन पिछले ४० वर्षों से लगातार भारत सरकार को आवेदन करता रहा है कि इसे राष्ट्र के भाषाओं की ८वीं सूची में शामिल किया जाये। पिछले वर्ष राजस्थान की विधान सभा में एकमत से इस प्रस्ताव को पारित कर यह मांग की है अत: यह अधिवेशन पुरजोर शब्दों में भारत सरकार से अनुरोध करता है कि राजस्थानी भाषा को ८वीं सूची में अविलम्ब स्वीकृत करें।

प्रस्ताव- श्री रतन शाह, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, कोलकाता
समर्थक- श्री विश्वनाथ केडिया, पूर्व उपाध्यक्ष, बिहार

अष्टम् प्रस्ताव
सामाजिक सुधार

पिछली शताब्दी १९००-२००० में समाज के भविष्यचेता लोगों ने सामाजिक कुरीतियों पर कटु प्रहार कर उन्हें समाज से निष्कासित करवाया। इस कार्य में सन् १९४० से सम्मेलन की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण रही। देश के विभिन्न भागों में शहर और गांव-गांव जाकर सम्मेलन के कार्यकर्त्ताओं ने पर्दा प्रथा उठवायी, बालिकाओं की शिक्षा पर अत्यधिक जोर दिया, विधवा-विवाह को सामाजिक रूप से स्वीकृत करवाया। इन बुराइयों के अलावा दहेज व आडम्बर के विरुद्ध निरंतर आन्दोलन करवाये एवं गांव-गांव में गोष्ठियां करवाई। इसे कोई नकार नहीं सकता कि इसके फलस्वरूप समाज का नारी व पुरुष वर्ग आज सभी क्षेत्रों में अपनी भागीदारी निभा रहा है और समाज के व्यक्ति सभी क्षेत्रों में अपनी भागीदारी निभा रहे हैं और समाज के व्यक्ति ऊंचे से ऊंचे पद को सुशोभित कर रहे हैं तथा सम्मेलन इस बात से मर्माहत है कि दहेज जैसी कुप्रथा समाप्त नहीं हुई है और समाज का एक वर्ग अपनी शानो-शौकत दिखाने के लिए विवाह शादी के अवसर पर काफी बड़ा प्रदर्शन व दिखावा करते हैं जिसके कारण समाज के मध्यम एवं अन्य वर्गों को काफी मुश्किलें सहनी पड़ती है अत: जैसे गुजराती एवं अन्य समाजों में है उसी प्रकार इस समाज को उनका अनुकरण कर विवाह के समय पूर्ण सादगी बरतने का पुरजोर शब्दों में आह्वान करता है।

इसके साथ ही समाज की अन्य अस्मिता- अपनी वाणी की साख, आपसी सहायता व सहयोग, बड़े-बूढ़ों के प्रति आदर भाव एवं उनकी देखरेख, परिवारों का एकाकीपन, खानपान आदि में जो गिरावट आई है उसे मिटाने और इन आदर्शों का अपने जीवन में अनुपालन करने में कोई कसर नहीं रखें जिसके कारण समाज के प्रति जो विश्वास और आदर पिछले वर्षों में रहा था वह पुन: सारे देश में प्रदर्शित रहे।

प्रस्ताव- श्री नन्दकिशोर जालान, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष,
कोलकाता
समर्थक- श्री नन्दलाल सिंहानिया, उपाध्यक्ष, पश्चिम बंग
प्रा.मा. सम्मेलन

समापन समारोह

११ जनवरी २००४

राष्ट्रीय सभापति श्री मोहनलाल तुलस्यान की अध्यक्षता में १९वें राष्ट्रीय महाधिवेशन का समापन समारोह ११ जनवरी की प्रात: यशवन्तराव बलवन्त राव चह्वाण हॉल में अत्यधिक उत्साहप्रद वातावरण में आयोजित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि थे केन्द्रीय जहाजरानी राज्यमंत्री श्री दिलीप गांधी। विशेष अतिथि द्वय थे विधायक श्री चैनसुख संचेती एवं विधायक श्री शंकरलाल केजड़ीवाल। अन्य मंचासीन गणमान्य थे- सर्वश्री नन्द किशोर जालान (पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष), सीताराम शर्मा (राष्ट्रीय महामंत्री), बलराम सुल्तानिया (राष्ट्रीय अध्यक्ष, अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच), डा. जय प्रकाश मूंदड़ा (राष्ट्रीय उपाध्यक्ष), रमेश चंद बंग (प्रांतीय अध्यक्ष), गोविन्द पारिख एवं ललित गांधी (सचिव द्वय), सुदेश अट्टल (अध्यक्ष, प्रान्तीय युवा मंच), भरत गुर्जर (प्रान्तीय महामंत्री, युवा मंच), वीरेन्द्र प्रकाश धोका (कार्यकारिणी सदस्य, प्रान्तीय युवा मंच) आदि।

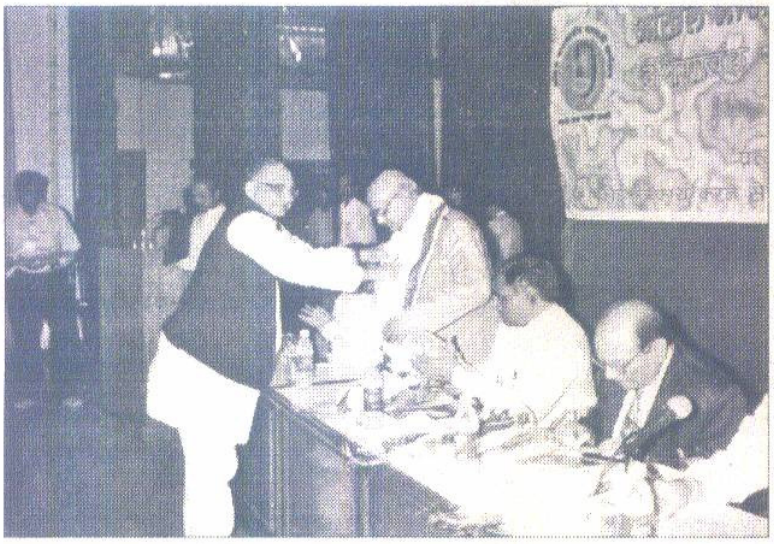

समापन समारोह के दौरान सम्मेलन के निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दकिशोर जालान का अभिनंदन दृश्य

सर्वप्रथम मंचासीन सम्मेलन एवं युवा मंच के राष्ट्रीय एवं प्रान्तीय पदाधिकारियों को पुष्पहार एवं शॉल प्रदान कर सम्मानित किया गया।

आयोजन के उद्देश्य एवं सफलता पर बोलते हुए श्री वीरेन्द्र प्रकाश धोका ने कहा- **लातुर में जयप्रकाशजी मूंदड़ा के नेतृत्व में आयोजित अधिवेशन में २५ हजार से भी अधिक समाज-बंधुओं की भीड़ एक रिकार्ड सिद्ध हुई थी। परन्तु इस अधिवेशन में प्रचार-प्रसार की कमी के कारण अपेक्षित उपस्थिति नहीं हो पायी है। १९७९ के बाद यह अधिवेशन हुआ है। इसका श्रेय भरत गुर्जर को है। भरत जी ने ही अधिवेशन का बीड़ा उठाया था। आज दिलीप जी हमारे बीच एक मिनिस्टर के रूप में उपस्थित नहीं हुए हैं बल्कि हमारे परिवार के सदस्य रूप में उपस्थित हुए हैं। श्री कन्हैयालाल जी सेठिया को पद्मभूषण के अनुमोदन के लिए श्री गांधी अपना भरपूर सहयोग देंगे।**

इस अवसर पर प्रकाशित स्मारिका २००४ का विमोचन करते हुए श्री दिलीप गांधी ने कहा- **तीन दिनों में हमने अलग-अलग सत्रों में कुछ सीखा है उसके चिन्तन की आवश्यकता है, अपनाने की आवश्यकता है। कहने को यह कार्यक्रम का समापन समारोह है परन्तु काम के शुभारम्भ करने की पहली सीढ़ी है। संगठन के कारण ही हम यहां बैठे हुए हैं और संगठन ही एक दिन हमें बहुत आगे ले जाएगा। संगठन के माध्यम से हमें जो कुछ मिलता है वही हमारी उपलब्धि है। हम जितने मित्र बनाते हैं उनके विचारों से सामंजस्यता बढ़ती है। यहीं से कार्यकर्ताओं के बढ़ाने का श्रीगणेश या सूत्रपात होता है। हमें अपने सम्पर्क को बनाये रखने के लिए साल में एक बार इस तरह के सम्मेलन को आयोजित करना चाहिए।**

हम अपने संस्कार के अनुसार अपनी प्रगति कर सकते हैं। समाज में हमें दूसरों का सम्मान करना चाहिए। दूसरों को बड़ा कहने से हम स्वयं बड़ा बनते हैं। कार्यकर्ताओं को प्रेम के बदले दो बोल से प्रेरित करें। उन्हें अच्छा विचार दें, उनके सम्मुख एक आदर्श रखें ताकि वह समाज का मार्ग-दर्शन कर सके। मुम्बई देश की आर्थिक राजधानी है परन्तु पैसे की अपेक्षा यहां से यह विचार लेकर जाएं कि जिससे संगठन बढ़े, राजनीति में हमारा समाज आगे बढ़े।

विशिष्ट अतिथि श्री चैनसुख संचेती ने कहा- अधिवेशन के माध्यम से अपने उद्देश्य एवं दायित्व का संदेश पूरे देश को देना माना जाता है। नेतृत्व करने वाला व्यक्ति जिस दिशा और गति में जाएगा कार्य करने वाला भी उसी दिशा और गति का अनुगमन करते हैं। हमारा दायित्व है कि हम दूरदर्शिता और सूझ-बूझ के साथ आने वाले समय में समाज को अग्रगति प्रदान करें ताकि हमारा समाज आगे बढ़े, हर प्रगति के, तरक्की की राह हम उसे दे सकें।

दक्षिणांचल अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच के माध्यम से हमने बड़े-बड़े कामों को अंजाम दिया है। गुजरात के भूचाल में युवा मंच ने वहां के मंजर को देखा, मृत शिशुओं के लिए विलाप करते उनके माता-पिता को देखा, सूनी आंखों से अपने माता-पिता को खोजते हुए बच्चों को देखा, स्कूल जाते दहशत भरे बच्चों के लिए काम किया। इस संगठन ने मानवतापूरक राहत देने का कार्य पूरी

मानवता की साथ किया है। मैं युवा वर्ग से आह्वान करता हूं कि वे बड़े-बुजुर्गों द्वारा निर्देशित राह पर चलें।

सम्मेलन के निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दकिशोर जालान ने इस अवसर पर अपने उद्‌बोधन में कहा- मारवाड़ी सम्मेलन की स्थापना १९३५ में राजनीतिक कारणों से हुई थी जिसके कारण हमें ब्रिटिश इण्डिया में वोटिंग राईट्स मिले। तब से आज तक सम्मेलन ने अनेकों विस्मरणीय उपलब्धियां हासिल की है, परन्तु हमने उनका कभी प्रचार प्रसार नहीं किया। समय परिवर्तन शीघ्र होता है। १९३५ से लेकर अब तक काफी परिवर्तन देखने को मिले हैं। आने वाले समय का चिन्तन करना है। आगामी १०-२०-२५ वर्षों में जो समय आने वाला है उसके प्रति पूरी सावधानी एवं सजगता से चिन्तन करना है। वही व्यक्ति सामाजिक संस्थाओं में आगे बढ़ता है और बुलाकर बैठाया जाता है जो कार्य करते हैं। श्री सीताराम शर्मा ऐसे ही दिग्गज कार्यकर्ता मुझे मिले हैं। सम्मेलन एक सामाजिक संस्था है और इस संस्था के समानान्तर दूसरी कोई संस्था नहीं हुई। पूरे भारत में फैले मारवाड़ी समाज पर कहीं-कहीं बड़े रूप में आघात कर उन्हें निष्कासित करने की चेष्टाएं होती रही है। पश्चिम बंगाल के सिलीगुड़ी-असम के अनेक स्थानों, मणिपुर, उड़ीसा आदि पूर्वोत्तर प्रदेशों में- ऐसे समय सम्मेलन के प्रतिनिधि इन सभी स्थानों पर पहुंचे, दंगों को बन्द करवाने में हर क्षेत्र से कार्रवाई करवाई और समुचित राहत दिलाने में सक्षम रहे। बम्बई में सम्मेलन का दूसरा अधिवेशन स्व. रामप्रसादजी पोद्दार की अध्यक्षता में १९७९ में हुआ। उसके कुछ समय बाद ही उड़ीसा में बड़े पैमाने पर उपरोक्त घटना घटी थी और उसके दमन में सम्मेलन की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी तथा प्रान्तीय मुख्यमंत्री ने हमारे एक बहुत बड़े आयोजन में क्षमा तो मांगी ही थी साथ ही साथ पुनः ऐसी कोई घटना न होने देने की प्रतिज्ञा की थी।

इक्कीसवीं सदी में उभर रहे दृश्यों और इसकी नई उभरती आवश्यकताओं में समाज के भविष्य के कार्यकलाप काफी महत्वपूर्ण होने लगते हैं। भूमण्डलीकरण जहां एक ओर प्रतिस्पर्धा को जोर पकड़वाता जाएगा वहीं काफी संकीर्ण हुई दुनिया की राजनीति में अनेक नए दृष्टिकोण और व्यवस्थाएं उभर कर आने की स्थिति बनती जा रही है। यह नितान्त आवश्यक है कि इन बदलती हुई परिस्थितियों का संतुलित आकलन किया जाए और उसके अनुकूल समाज के कृतित्व के लिए समुचित आह्वान दिया जाए तथा आपसी संगठन एवं समरसता को अधिक से अधिक विस्तारित किया जाए। हमें इस बात को समझना है कि स्थानीय निवासियों एवं हममें कोई फर्क नहीं है। हमने रोजगार यहां किया है, हमारी संतानें यहां पैदा हुई हैं, हमारा घर-द्वार यहीं बना है, हमें यहां के लोगों के बीच परस्पर सद्‌भाव एवं अपनापन को प्रमाणित करना होगा। हमारा समाज चारों दिशाओं में फैला हुआ है। आज देश के उपराष्ट्रपति मारवाड़ी हैं, राजस्व मंत्री मारवाड़ी है जिसने देश की अर्थ व्यवस्था को बढ़ाया है फाइनान्स को बढ़ाया है इससे सिद्ध होता है कि हमारा चिंतन कितना बलशाली है।

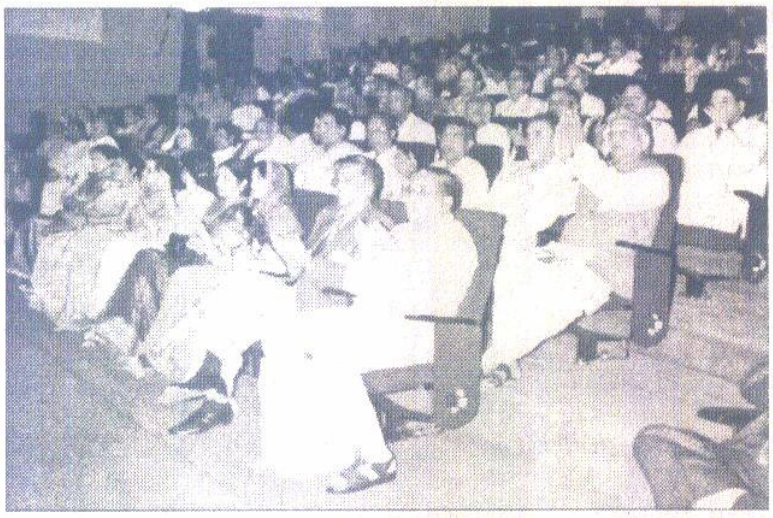

सभागार में उपस्थित सदस्यवृन्द

मुम्बई में हुए अन्य अधिवेशनों की भांति यह अधिवेशन भी मील का पत्थर साबित हुआ है। यह अधिवेशन समाज व देश के सभी वर्गों को अग्रगति देने में सहयोगी, कार्यशील और प्रभावी सिद्ध हुआ है। आयोजकों को बधाई। अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच के अध्यक्ष श्री बलराम सुल्तानिया ने कहा- एक काल में मारवाड़ी समाज सेवा का जो कार्य कर रहा है वह हम व्यक्तिगत रूप से करते थे। एक उद्देश्य था कि हम जो भी करते हैं उसकी भनक पड़ोसियों को भी न हो। लेकिन आज मारवाड़ी युवा मंच के कार्यकर्ताओं ने ऐसे-ऐसे कार्यक्रम किए हैं जिससे मंच ने काफी ख्याति अर्जित की है। हम सम्मेलन पदाधिकारियों से अनुरोध करते हैं कि युवा मंच में ४५ की उमर के उपरान्त रिटायर कर जाने वाले सदस्यों को सम्मेलन में लेने का प्रयास किया जाए। हम सभी सम्मेलन को अपना सहयोग देने को तैयार हैं। हमारे युवा साथियों में जोश है और जोश तथा होश का संगम हो जाए तो हम बहुत कुछ कर सकते हैं।

राजनीति में आने के लिए ग्रास रूट से संघर्ष करने पड़ते हैं और उस समय समाज की जरूरत पड़ती है परन्तु वह जरूरत पूरी नहीं होती, नहीं तो हर घर से एक सदस्य को राजनीतिज्ञ बनने से कोई रोक नहीं सकता था। नजरिया बदलना होगा। सभी चाहते हैं कि समाज में कोई नेताजी सुभाष पैदा हो- परन्तु साथ ही साथ यह भी चाहता है कि सुभाष पड़ोस में पैदा हो अपने घर में तो बिड़ला ही पैदा हो।

राष्ट्रीय महामंत्री श्री सीताराम शर्मा ने कहा- यह मेरा विदाई वक्तव्य है। मेरे सामाजिक जीवन के प्रणेता रहे हैं श्री गीतेश

जी शर्मा, एक सुप्रसिद्ध पत्रकार एवं लेखक। इनकी प्रेरणा से मैं पहली बार एक अधिवेशन में सम्मिलित हुआ। मेरे आने पर मुझे नन्दकिशोर जी ने १९९३ में संयुक्त महामंत्री का भार दे दिया। पिछले दो सत्रों से महामंत्री पद पर रहा हूँ। बहुच अच्छे मित्र बनाये।

आज के इस अधिवेशन का पहला बीज महाराष्ट्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के पूणे के अधिवेशन में बोया गया। वहीं बात हुई कि सम्मेलन का १९वां राष्ट्रीय अधिवेशन मुम्बई में हो।

अधिवेशन का अर्थ है अपने समाज के बन्धुओं का मिलनोत्सव। अपने घर में किए गए कार्य की कमियां नहीं खोजी जाती। हमारे सम्मेलन के जनक थे प. बंगाल सरकार के कानूनमंत्री श्री ईश्वरदास जालान। ईश्वरदास जालान ने दर्जनों अध्यक्ष बनाए पर वे कभी अध्यक्ष नहीं बने। आज उन्हीं की छवि हम नन्दकिशोर जालान में पाते हैं। सबसे अधिक बड़े हैं, फिर भी सबसे अधिक कार्य करते हैं। सही मायने में कहा जाए तो नन्द किशोर जालान से ही सम्मेलन जीवित है। मेरा सौभाग्य है कि मैं सम्मेलन से जुड़ा। सम्मेलन गांवों में शाखाओं में बसता है। प्रान्तों में, जिलों में, शाखाओं में केन्द्रीय मारवाड़ी सम्मेलन एक भूमिका निभाता है उन्हें जोड़ने का आगे बढ़ाने का। कोई भी व्यक्ति संस्था से बढ़कर नहीं है। उसके नहीं रहने पर संस्था के स्वास्थ्य पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

संविधान में हमने सुधार किया है- जिस प्रान्त में ३ वर्ष के अन्दर चुनाव नहीं हुआ तो वह स्वत: ही भंग हो जाएगा। मुझे दु:ख है कि मेरे कार्यकाल में कुछ प्रान्तों में इसे लागू करना पड़ा। मुझे संस्था को डेमोक्रेटिक बनाना है। नये लोगों को जोड़ना है। उनके विचारों को समझना है। हमने युवा मंच हो या महिला सम्मेलन हो उन्हें कभी अलग नहीं समझा अपना अंग समझा है। मंच से आए हुए सदस्य को हमने सम्मेलन में लिया है। बिहार के अध्यक्ष डा. रमेश कुमार केजड़ीवाल इसके उदाहरण हैं। सम्मेलन ने पिछले वर्षों में बहुत बड़ा काम किया है, आने वाले समय में और भी प्रगति करेगा।

मुम्बई ने सदैव मारवाड़ी सम्मेलन को एक नई दिशा प्रदान की है। कल भी ऐसी ही दिशा प्राप्त हुई है। आठ महत्वपूर्ण प्रस्ताव पास हुए हैं- जिसमें हमने एक नारा दिया है- मारवाड़ी समाज राजनीति में आगे आए। श्री दिलीप जी के प्रस्ताव पर एवं श्री मूंदड़ा जी के सुझाव पर दूसरा नारा बना कि जो राजनीति में आगे आए उसे समाज का तन मन धन से सहयोग मिले। सत्ता में रहें या सत्ता के बाहर रहे उनके प्रति हमें तन मन धन से समर्थन देना होगा। मैं सारे देश को यह संदेश देता हूं कि समरसता का सबसे बड़ा उदाहरण हम महाराष्ट्र प्रदेश में पाते हैं जिसकी भाषा, खान-पान सभी में मराठापन झलकता है। वे हिन्दी बोलते हैं तो उसमें भी मराठीपन झलकता है।

आयोजकों के प्रति आभार जिन्होंने इतनी सुन्दर व्यवस्था की ठहरने की, भोजन आदि की। आभार उनके प्रति जो देश के विभिन्न दिशाओं से अधिवेशन में सम्मिलित हुए और इसे गरिमा प्रदान किए। सम्मेलन बहुत ऊंचाई को छुए यही कामना है मेरी।

युवा मंच के प्रदेश उपाध्यक्ष एवं अधिवेशन के संयोजक श्री राज पुरोहित ने कहा- पहले एक मात्र अपना समाज प्रगति कर रहा था पर आज सारे समाज प्रगति कर रहे हैं। प्रतिस्पर्धा का युग आ गया है। इसका विचार सम्मेलन को करना चाहिए। संत्रासवादी शक्ति न बढ़े, धर्म की ताकत बढ़े ऐसी व्यवस्था अपनाएं। आदिवासी का कल्याण हो वह व्यवस्था ग्रहण करें। मुझे मारवाड़ी सम्मेलन ने बहुत प्रभावित किया है। अमेरिका के राना प्रोग्राम में मैं कन्वेनर बनाया गया हूं। मैंने पत्र दिया है कि श्री मोहनलाल तुलस्यान को सलाहकार के रूप में सम्मिलित किया जाए।

सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान ने अपने उद्‌बोधन में प्रकट किया- महाराष्ट्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा आयोजित सम्मेलन के १९वें राष्ट्रीय अधिवेशन एवं दक्षिणांचल अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच के प्रथम अधिवेशन में यहां आकर ऐसा लगा जैसे मैं चांद पर पहुंच गया हूं। आपने १९वें राष्ट्रीय अधिवेशन में चार चांद लगाये हैं। महाराष्ट्र की धरती ने हमें एक नयी धारा, नया उत्साह, नई ऊर्जा दी है। आपके बिना मैं अधूरा था, आपने मुझे पूरा किया। आपका साथ पाकर मैं सहस्रबाहु हो गया हूं। आपका पूरा सहयोग, समर्पण, प्यार हमें मिला। प्रत्येक व्यक्ति का समाज में, राष्ट्र में, जीवन में महत्व है। उसी महत्ता के आधार पर व्यक्ति समाज में कोई स्थान प्राप्त करता है। सर्वगुण सम्पन्न हमारे समाज ने विभिन्न क्षेत्रों में अपने आप को स्थापित किया है फिर भी समाज को दीर्घजीवी रखने के लिए एवं बदलती हुई दुनिया के मानचित्र पर अपना विशिष्ट स्थान बनाने के लिए इसका राजनीति में पदार्पण करना अति आवश्यक है। व्यापार की तरह हमें राजनीति में भी साफ-सुथरी छवि को स्थापित करना है। श्री सीताराम शर्मा लगातार दो सत्र तक राष्ट्रीय महामंत्री पद को गौरवान्वित कर आज इस पद से विदा हुए। मुझे उनका भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ। इसके लिए मैं उनका आभार व्यक्त करता हूं। मुझे राष्ट्रीय पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी को चुनने का दायित्व दिया गया है। दायित्व पालन की प्रथम कड़ी में मैं डा. जय प्रकाश मूंदड़ा को जो कि पहले भी राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पद को गौरवान्वित किए हैं इस सत्र के लिए भी राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पद पर मनोनीत करता हूं। मैं श्री दिलीप गांधी को राष्ट्रीय कार्यकारिणी के वरिष्ठ सलाहकार के रूप में तथा श्री राज. के. पुरोहित को राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री के रूप में मनोनीत करता हूं। अधिवेशन में अंश ग्रहण करने वाले हमारे सभी समाज बन्धुओं, सदस्यों में जो उत्साह है मुम्बई के हमारे साथियों में जो जोश है उसे मैं नमन करता हूं। यही उत्साह और जोश हमारे समाज के गौरव को और भी अधिक प्रतिष्ठित करेगा। प्रादेशिक अध्यक्ष श्री रमेशचन्द बंग ने समापन समारोह को सम्बोधित करते हुए कहा- हमारे उदार अतिथियों ने हमारी त्रुटियों को सम्भाला, सराहा एवं तारीफ की इसके लिए हमारा अभिनन्दन। हमें संगठन को अभी और भी मजबूती प्रदान करना होगा वरन् यह समारोह का अर्थ अधूरा ही रह जाएगा। अपना समाज बुद्धिजीवी समाज है जिसमें काम करना बड़ा मुश्किल होता है। हमें महाराष्ट्र की संगठन शक्ति को बढ़ाना है, महिलाओं को पैनेल बॉडी में लाकर उन्हें तैयार करना है। समापन समारोह को संबोधित करने वाले अन्य महानुभावों में थे- सर्वश्री डा. जयप्रकाश मूंदड़ा, पुरुषोत्तम दरड, शंकर लाल केजड़ीवाल, सुदेश अट्टल, ओम प्रकाश पोद्दार, भरत गुर्जर आदि। राष्ट्रीय गान जन गण मन... के गायन के साथ इस भव्य महाधिवेशन का समापन हुआ।

अधिवेशन से अलग कुछ यादगार क्षण कैमरे में कैद

निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नंदकिशोर जालान केन्द्रीय मंत्री श्री दिलीप गांधी के साथ विनोद मुद्रा में

सर्वश्री वीरेन्द्र प्रकाश धोका, नंदकिशोर जालान, मोहनलाल तुलस्यान, रामअवतार पोद्दार आदि

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान, श्री ओम प्रकाश अग्रवाल, श्री वीरेन्द्र प्रकाश धोका आदि

हास्य विनोद के एक क्षण!

सर्वश्री वीरेन्द्र प्रकाश धोका, ओम प्रकाश अग्रवाल, हरि सिंह कानोड़िया, रवीन्द्र कुमार लड़िया, सीताराम शर्मा, रामअवतार पोद्दार आदि

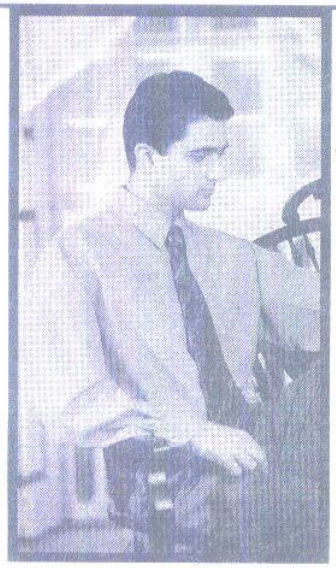

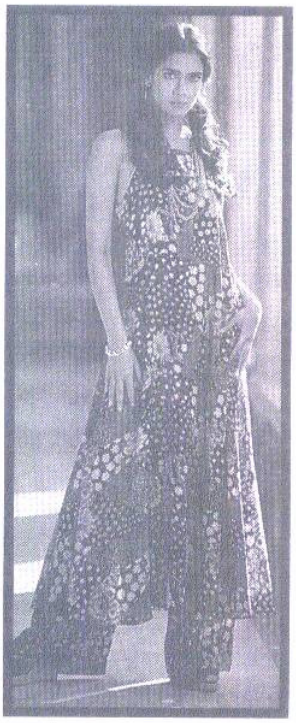

ONLY VIMAL

Mudra:RIL:99:393

VIMAL
A RELIANCE PRODUCT

Suitings
Shirtings
Sarees
Dress Material

Reliance Industries Limited
Textile Division, Naroda, Ahmedabad 382330.

REGISTERED Postal Registration No. MM&PO/WB/RNP-388/2003 SAMAJ VIKAS - FEBRUARY 2004 RNI Regd. No. 2868/68

दिशा बोध

निष्काम कर्मयोग में अद्‌भुत सामर्थ्य है। ऐसे कर्म से व्यक्ति और समाज दोनों का परम कल्याण होता है। स्वधर्माचरण करने वाले कर्मयोगी की शरीर-यात्रा तो चलती ही है, पर सदा सर्वदा उद्योग-रत रहने के कारण उसका शरीर भी निरोग रहता है। साथ ही उसके इस कर्म की बदौलत उसके समाज का भी योगक्षेम अच्छी तरह चलता है।

कर्मयोगी किसान, अधिक पैसों के लोभ में, अफीम या तमाखू नहीं बोयेगा; क्योंकि वह अपने कर्म का सम्बन्ध समाज-मंगल के साथ जोड़े हुए हैं। स्वधर्म-रूप कर्म समाज के लिए हितकारी ही होगा। जो व्यापारी यह मानता है कि मेरा यह व्यवहार-रूप कर्म समाज के हित के लिए है वह कभी विदेशी कपड़ा नहीं बेचेगा, न ही अपनी चीजों में मिलावट करेगा। उसका सारा व्यापार समाजोपकारक होगा। खुद को भूल कर अपने आसपास के समाज से समरस होने वाले कर्मयोगी जिस समाज में पैदा होते हैं उस समाज में सदा सुव्यवस्था, समृद्धि और सौमनस्य वास करते हैं।

कर्मयोगी के कर्म के फलस्वरूप उसकी शरीर-यात्रा चलकर देह व बुद्धि सतेज रहते हैं और समाज का भी कल्याण होता है। इन दो फलों के अलावा चित्तशुद्धि का भी महान् फल उसे मिलता है। कर्म चित्तशुद्धि का साधन है। कर्मयोगी के कर्म को एक प्रकार का जप ही समझो। उससे उसकी चित्तशुद्धि होती है और निर्मल चित्त में ज्ञान का प्रतिबिम्ब पड़ता है।

कर्मयोगी के कर्म से एक और भी फल मिलता है। वह सदैव कर्म-रत रहता है, इससे समाज में दम्भ-ढोंग नहीं बढ़ता। समाज से दम्भ-ढोंग का मिटना बहुत बड़ी चीज है। ढोंग-पाखण्ड से समाज डूब जाता है। कर्मयोगी खुद यद्यपि स्वयं-तृप्त होता है, तो भी निरन्तर कर्म किये बिना उससे नहीं रहा जाता। वह उसका सहज धर्म हो जाता है। इस तरह वह समूचे समाज को स्वधर्म-कर्म रूपी सेवा की सीढ़ी का महत्व समझाता रहता है।

सार यह है कि कर्मयोगी फल की इच्छा छोड़ने पर अनन्त फल प्राप्त करता है। उसकी शरीर-यात्रा चलती रहती है और उसका शरीर तथा उसकी बुद्धि सतेज होते हैं। जिस समाज में वह विचरेगा, वह समाज सुखी होगा उसकी चित्त शुद्धि होकर ज्ञान भी मिलेगा, और समाज से ढोंग-पाखण्ड मिट कर जीवन का पवित्र आदर्श हाथ लगेगा।

- आचार्य विनोबा

From :
All India Marwari Federation
152B, M.G. Road, Kolkata-7
Phone : 2268-0319

To,